सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-03, कुल पृष्ठ-36, अग्रहन-पौष, विक्रम सम्वत् 2081, दिसम्बर, 2024

दानवीर भामाशाह

सेवा के लिए बदल ली अपनी जाति

ग्रामीणों के बीच संजीव डोम

बिहार के खगड़िया में एक ऐसे समाजसेवी हैं, जिन्होंने डोम जाति की सेवा के लिए अपना नाम संजीव डोम कर लिया। उनका नाम है- संजीव कुमार और कथित ऊँची जाति से हैं। पर अब वे संजीव डोम के नाम से ही जाने जाते हैं। वे लगभग 20 वर्ष से खगड़िया में डोम समाज के बच्चों और लोगों के लिए कार्य कर रहे हैं। अब तक वे सैकड़ों बच्चों का भविष्य बना चुके हैं। यही नहीं, ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं के माध्यम से सशक्त भी कर रहे हैं।

संजीव गुरुग्राम में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी करते थे, लेकिन एक घटना ने उन्हें ऐसा प्रभावित किया कि वे सब कुछ छोड़कर खगड़िया पहुँच गए। वह घटना थी 2005 की। वे अपनी बहन की सास के श्राद्ध के लिए कन्हैयापुर (खगड़िया) गए थे। वहाँ उन्होंने देखा कि कुछ बच्चे जूठी पत्तलों को चाट रहे हैं। यह देखकर उन्हें बहुत बुरा लगा। पता चला कि ये लोग डोम जाति से हैं और जूठी पत्तलों को चाटना उनकी परंपरा है। यह जानकर वे दंग रह गए और उस रात वे खाने खाए बिना सो गए। सुबह वे उठे और एक बार फिर से उस स्थान पर गए, जहाँ पत्तलें फेंकी गई थीं। वहाँ उन्होंने देखा कि कुछ बच्चे जूठन खाने के लिए कुत्तों से संघर्ष कर रहे हैं। इस दृश्य ने उन्हें अंदर तक हिला दिया। दिल्ली आकर उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि वे नौकरी छोड़कर डोम जाति के बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। घर वाले हक्के-बक्के रह गए। इसके बाद वे जून, 2006 में कन्हैयापुर पहुंचे। रात में बहन के घर रहते और दिन में डोम बस्ती में। वह बस्ती प्रखंड कार्यालय के पास है। कई दिनों तक वे वहां एक पेड़ के नीचे बैठकर खेलते हुए बच्चों को निहारते रहे। तत्कालीन प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) अनिल कुमार सिंह की नजर आते-जाते संजीव पर पड़ती। उन्होंने एक दिन पूछा, तुम यहां क्यों बैठे रहते हो? संजीव ने कहा, बस्ती के बच्चों को पढ़ाना है। उन्हें लगा कि शहरी युवा है, जब तकलीफें होंगी तो छोड़कर चला जाएगा। लेकिन उनकी धारणा गलत निकली। कुछ दिन बाद उन्होंने देखा कि संजीव एक पेड़ के नीचे 30-35 बच्चों को पढ़ा रहे हैं। कक्षा शुरू करने से पहले संजीव ने अपने नाम के साथ 'डोम' शब्द लगा लिया। यानी उन्होंने अपना नाम संजीव डोम रख लिया। पढ़ाने से पहले वे बच्चों को खुद नहलाते भी थे। अब बीडीओ अनिल कुमार सिंह को भरोसा हुआ कि संजीव सच में बस्ती के बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। उन्होंने संजीव से कहा कि खुले के बजाय पड़ोस के लोहिया भवन में बच्चों को पढ़ाओ। इसी दौरान उन्होंने 'बहिष्कृत हितकारी संगठन' की स्थापना की। उसके सभी प्रमुख पदों की जिम्मेदारी बस्ती के लोगों को ही दी गई। इस संगठन के बैनर तले पूरे क्षेत्र में समाज जागरण का कार्य शुरू किया गया। इन कार्यों की जानकारी उनके घर वाले किसी न किसी तरीके से लेते थे। आखिर में वे लोग भी बेटे के कार्य में सहयोग के लिए तैयार हो गए और उनके खर्च के लिए कुछ राशि हर महीने भेजने लगे। इसके साथ ही उनकी मां ने उनके सामने प्रस्ताव रखा कि अब विवाह कर लो। संजीव ने शर्त रखी कि यदि लड़की खगड़िया में रहेगी तभी विवाह हो सकता है। इसी शर्त पर विवाह हुआ। दोनों खगड़िया में एक किराए के मकान में रहने लगे। दोनों का सारा खर्च घर वाले ही देते थे। इस बीच घर में एक नए मेहमान का आगमन हुआ। पत्नी उसके भविष्य की दुहाई देकर उन्हें दिल्ली वापस जाने के लिए कहने लगी, लेकिन संजीव नहीं माने। आखिर में 2010 में उनकी पत्नी उन्हें छोड़कर दिल्ली वापस आ गई। अब भी वे खगड़िया, परबत्ता जैसे क्षेत्रों में दिन-रात समाज सेवा कर रहे हैं। ❐

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-03, कुल पृष्ठ-36, दिसम्बर, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
भारतीय संस्कृति और दान	डॉ. दीपा गुप्ता ड्रोलिया	5
धान की उत्तम गति दान है	जगराम भाई जी	6
दान की महिमा	डॉ. शिवाली	9
दानवीर भामाशाह का राष्ट्रप्रेम	आचार्य अनमोल	10
दधीचि देहदान समिति	मंजू	12
दान की सनातन परंपरा	स्वाति पाठक 'स्वाति'	13
जागृति महिला स्वावलम्बन	डॉ. शिवाली अग्रवाल	14
परमात्मा तुल्य हमारे दानदाता	दीप्ति अग्रवाल	16
सेवा भारती ने बदली जिंदगी	इन्दिरा राय	17
महिला स्वावलंबन की मंगल यात्रा-उद्योग वर्धिनी	इन्दिरा मोहन	20
सेवा सम्मान 2023		22
बिरसा मुंडा : धर्म, धरती और समाज के रक्षक	मानवेंद्र	24
सेवा कब सम्मान बन जाता है	आचार्य आशुकवि पंकज	26
जैविक खेती: उद्यमशीलता का एक नया प्रयोग	डॉ. स्मिता यादव	27
एक बैंक, जहां मिलती है रोटी	रिषिता अग्रवाल	29
सेवा भारती की यशस्वी यात्रा		30

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

दान का महत्व

अगर आप समर्थवान हैं तो याचक को कुछ न कुछ अवश्य दान कर दें। इसका क्या लाभ हो सकता है, इसे एक सुंदर कथा से समझ सकते हैं। एक भिखारी सुबह-सुबह भीख मांगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल लिए। टोटके या अंधविश्वास के कारण भिक्षा मांगने के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। उसमें कुछ न कुछ अवश्य रख लेते हैं। पूर्णिमा का दिन था। उस दिन लोग दान करते हैं। इसलिए भिखारी को विश्वास था कि आज ईश्वर की कृपा होगी और झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। वह एक स्थान पर खड़ा होकर भीख मांग रहा था, तभी उसे सामने से उस देश के नगर सेठ की सवारी आती दिखाई दी। सेठ पूर्णिमा को किया जाने वाला नियमित दान कर रहा था। भिखारी तो प्रसन्न हो गया। उसने सोचा, नगर सेठ के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से उसका कई दिनों का काम हो जाएगा। जैसे-जैसे सेठ की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। सेठ का रथ पास रुका और वह उतरकर उसके पास पहुंचे। अब तो भिखारी न जाने क्या-क्या पाने के सपने देखने लगा। लेकिन यह क्या, बजाय भिखारी को भीख देने के सेठ ने उलटे अपनी कीमती शॉल उसके सामने फैला दी। सेठ ने भिखारी से ही कुछ दान मांग लिया।

वह प्रतिदिन लोगों के सामने झोली पसारता है। आज उसके सामने किसी ने झोली पसार दी वह भी नगर के सबसे बड़े सेठ ने। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था क्या करे। अभी वह सोच ही रहा था कि सेठ ने फिर से याचना की। भिखारी धर्मसंकट में था। कुछ न कुछ तो देना ही पड़ता। कहां वह मोटा दान पाने की आस लगाए बैठा था, कहां अपने ही माल में से कुछ निकलने वाला था। उसका मन खट्टा हो गया। भिखारी ने निराश मन से अपनी झोली में हाथ डाला। सदैव दूसरों से लेने वाला मन आज देने को राजी नहीं हो रहा था। जैसे-तैसे करके उसने झोली से जौ के दो दाने निकाले और सेठ की चादर में डाल दिया। सेठ उसे लेकर मुस्कुराता हुआ चला गया। हालांकि उस दिन भिखारी को प्रतिदिन से अधिक भीख मिली थी। फिर भी उसने जौ के जो दो दाने अपने पास से गंवाए थे, उसका मलाल सारा दिन रहा। बार-बार यही ख्याल आता कि न जाने क्या हुआ सेठ देने के बजाय लेकर ही चला गया। यही सब सोचता हुआ वह घर पहुंचा। शाम को जब उसने झोली पलटी तो आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह अपने साथ लेकर गया था उसके दो दाने सोने के हो गए थे।

जौ के दाने सोने के कैसे हो गए और हुए भी तो केवल दो ही दाने क्यों, पूरे ही हो जाते तो कंगाली मिट जाती। वह यह सोच ही रहा था कि उसका माथा ठनका। कहीं यह सेठ को दिए दो दानों का प्रभाव तो नहीं है।

भिखारी को समझ में आया कि यह दान की ही महिमा के कारण हुआ है। वह पछताया कि काश! उस सेठ को और बहुत सारी जौ दे दी होती लेकिन नहीं दे सका क्योंकि देने की आदत जो नहीं थी। हम ईश्वर से सदैव पाने की इच्छा रखते हैं, क्या कभी सोचा है कि कुछ दिया भी जा सकता है। देने से कोई छोटा नहीं होता। सुपात्र को देने की नीयत रखें। कुपात्र को दिया दान व्यर्थ जाता है। जिनका पेट भरा है उनके मुंह में रसगुल्ले ठूंसने से बेहतर है भूखे को एक बिस्किट का पैकेट पकड़ा दें। दान से आपके पूर्वजन्मों के दोष कटते हैं। जो ग्रह खराब हो उसका दान करने से उस ग्रह के दोष आपसे निकलते जाते हैं। यदि आप परेशानियों से लगातार जूझ रहे हैं तो सेवा कीजिए जरूरतमंदों की। धन का ही दान हो जरूरी नहीं। ❒

भारतीय संस्कृति और दान

■ डॉ. दीपा गुप्ता ड्रोलिया

दान एक शब्द नहीं, अपितु भावना है। भारतीय संस्कृति का अटूट स्तंभ है। जिसमें हम न केवल अपने लिए, बल्कि दूसरे के भले के लिए भी सोचते हैं। हजारों वर्षों से दान के, हमारे समक्ष ऐसे-ऐसे उदाहरण प्रस्तुत हुए हैं, जो हमें सदा गौरान्वित करते हैं। न जाने कितनों ने अपना राज-पाठ, परिवार, यहां तक कि खुद को भी न्योछावर कर दिया। भारतीय संस्कृति का इतिहास ऐसे महान दानियों के नाम से भरा पड़ा है। जैसे: महादानी कर्ण की कथा कौन नहीं जानता। यह जानते हुए भी कि इन्द्रदेव द्वारा कवच और कुंडल का दान माँगने से, उनकी मृत्यु निश्चित है। अगर, उनका दान दिया गया तो। यह एक ऐसा उदाहरण है जो हमें सिखाता है, कि दान के सामने यह जीवन भी तुच्छ है।

सत्य और दान के प्रतीक राजा हरिश्चंद्र ने दान के लिए अपने राज्य और परिवार का त्याग किया था। जो आज के युग में असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार महान ऋषि दधीचि का नाम भी महान दानदाताओं की श्रेणी में आता है ,जिन्होंने अपने अस्थियों का दान, इंद्रदेव को दिया, जिससे वज्र नामक अचूक अस्त्र का निर्माण हुआ। पुरातन काल में एक और भी महान दानी हुए जिनका नाम राज बलि था। जिनके घर स्वयं विष्णु भगवान, याचक के रूप में आए। राजा बलि का दान, इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि, अपने साथ हो रहे छल को जानते हुए भी, उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, और 3 पग धरती, भगवान विष्णु के वमन अवतार को दी। जिससे उनका धन, वैभव, ऐश्वर्या सभी कुछ चला गया। परन्तु उन्होंने ऐसा दान इसलिए दिया, क्योंकि वह जीवन के सार को जान चुके थे कि देना ही सबसे बड़ा सुख है। लेकिन ऐसा नहीं है कि आज के समाज में दानियों की कमी है, जिनमें से कुछ हैं, अजीम प्रेमजी, शिव नादर, मुकेश अंबानी, स्वर्गीय रतन टाटा जी। एक भारतीय, जिनका नाम निस्वार्थ दान की भावना को नमन करते हुए, अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा चुका है।

नेकी कर और कुएं में डाल। यह कहावत, इन सभी महान व्यक्तियों के जीवन का सच है। दान की महत्ता और उससे शान्ति के सुख की, जो प्राप्ति होती है, वह सभी खुशियों से बढ़कर है। आत्मिक शान्ति का आभास, दान देने वाले के और लेने वाले के जीवन में आशा और नवजीवन का संचार कर देता है। दान से बढ़कर और कोई पुण्य नहीं है। क्यों की ये है मानवता की सुंदर अभिव्यक्ति है। प्रकृति भी इसी भावना से कार्य करती है। सूर्य अपनी रोशनी और गर्मी से सम्पूर्ण विश्व को जीवन प्रदान करता है ।वायु जीवन दायिनी है। नदी की जलधारा सभी की प्यास बुझाती है ।और वृक्ष फल लगने पर और अधिक झुक जाता है, अगर प्रकृति इतनी दानी है, तो प्रकृति की सबसे श्रेष्ठ रचना, मनुष्य जाति का यह धर्म है कि वह अपने जीवन में भी, हर किसी जरूरतमंद की सहायता करें और उनके जीवन में भी प्रकाश फैलाए। इस युग मैं भी कई प्रकार के सेवा कार्य चल रहे हैं जिनमें से कुछ है, रोटी बैंक(रोटी का दान जरूरत मंडन को करना), जनता की रसोई (खाना केवल 10 रुपए में उपलब्ध करवाना), जनता का अस्पताल (जिस में नि:शुल्क दवा उपलब्ध करवाना) आदि। गीता में श्रीकृष्ण ने भी यही कहा है कि निष्काम भाव से दिया गया दान, आत्मा को पवित्र और प्रकाशमय करता है। धन्य है, वे आत्मा जो कि अपनी क्षमता और योग्यता से दूसरों के मुश्किल समय में दान दे कर, जरूरतमंदों के जीवन की मुश्किलों को आसान करता है। दान जीवन का मधुर संगीत है। ❒

धन की उत्तम गति दान है

■ जगराम भाई जी

एकमात्र दान मनुष्य के कल्याण का साधन है। दान श्रद्धापूर्वक करना चाहिए, विनम्रतापूर्वक देना चाहिए। दान के बिना मानव की उन्नति अवरुद्ध हो जाती है। एक बार देवता, मनुष्य और असुर तीनों की उन्नति अवरुद्ध हो गई। अत: वे पितामह प्रजापति ब्रह्मा जी के पास गए और अपना दुख दूर करने के लिए उनसे प्रार्थना करने लगे। प्रजापति ब्रह्मा ने तीनों को मात्र एक अक्षर का उपदेश दिया- द। स्वर्ग में भोगों के बाहुल्य से, देवगण कभी वृद्ध न होना सदा इंद्रिय भोग भोगने में लगे रहते हैं, उनकी इस अवस्था पर विचार कर प्रजापति ने देवताओं को 'द' के द्वारा दमन, इंद्रिय दमन का संदेश दिया। असुर स्वभाव से हिंसा वृत्ति वाले होते हैं, क्रोध और हिंसा इनका नित्य व्यापार है। अत: प्रजापति ने उन्हें दुष्कर्म से छुड़ाने के लिए 'द' के द्वारा जीव मात्र पर दया करने का उपदेश दिया/ मनुष्य कर्मयोगी होने के कारण सदा लोभवश कर्म करने तथा धनोपार्जन में लगे रहते हैं, इसलिए 'द' के द्वारा उनके कल्याण के लिए दान करने का उपदेश दिया। विभव और दान देने की सामर्थ्य अर्थात मानसिक उदारता- ये दोनों महान तप के ही फल हैं।

विभव होना तो सामान्य बात है पर उस विभव को दूसरों के लिए देना यह मन की उदारता पर निर्भर करता है। यही है दान शक्ति जो जन्म-जन्मांतर के पुण्य से प्राप्त होती है।

दान की महिमा के सन्दर्भ में यजुर्वेद में कहा है यथा- "देवो देवेसु देव:" अर्थात -देवों में दानादि गुणों से युक्त ही देव होता है। तैत्तरीय आरण्यक में कहा है-दान मिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसन्ति, दानानाति दुष्करम्।

यानी सभी प्राणी दान की प्रशंसा करते हैं। दान से बढ़कर अन्य कुछ भी दुर्लभ नहीं है। याचक मर जाता है, पर दाता कभी नहीं मरता। दानी कभी दुख नहीं पाता। दान से धर्म का मार्ग साफ रहता है। अत: दान देकर पश्चाताप नहीं करना चाहिए। धन की उत्तम गति दान ही है। सच्चा दानी प्रसिद्धि की अभिलाषा भी नहीं करता। दान के कारण ही मानव देवत्व को पाता है। व्यास भगवान ने दान धर्म को निम्न भागों में विभक्त किया है यथा-

दान देना हमारे विचारों एवं हमारे व्यक्तित्व पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। इसलिए हमारी संस्कृति हमें बचपन से ही देना सिखाती है न कि लेना। हमें अपने बच्चों के हाथों से दान करवाना चाहिए, ताकि उनमें यह संस्कार बचपन से ही आ जाएं।

नित्य दान : प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामर्थ्य अनुसार कर्तव्य बुद्धि से नित्य कुछ न कुछ दान करना चाहिए। असहाय एवं गरीबों को नित्यप्रति सहायता रूप में दान करना कल्याणकारी है। शास्त्रों में प्रत्येक गृहस्थ के पांच प्रकार के ऋणों- देवऋण, पितृऋण, ऋषिऋण, भूत ऋण और मनुष्य ऋण से मुक्त होने के लिए प्रतिदिन पांच महायज्ञ करने की विधि है। अध्ययन-अध्यापन ब्रह्म यज्ञ-ऋषि ऋण से मुक्ति, श्राद्ध तर्पण करना पितृयज्ञ, पितृऋण से मुक्ति, हवन पूजन करना देव यज्ञ देव ऋण से मुक्ति, बलिवैश्व देव यज्ञ करना अर्थात सारे विश्व को भोजन देना। भूत यज्ञ-भूतऋण से मुक्ति और अतिथि सत्कार करना मनुष्य यज्ञ अर्थात मनुष्य ऋण से मुक्ति। अत: गृहस्थ को यथासाध्य प्रतिदिन इन्हें करना चाहिए।

नैमित्तिक दान : जाने-अनजाने में किए गए पापों को शमन हेतु तीर्थ आदि पवित्र देश में तथा अमावस्या, पूर्णिमा, व्यतिपात, चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि

पुण्यकाल में जो दान किया जाता है उसे नैमित्तिक दान कहते हैं।

काम्य दान : किसी कामना की पूर्ति के लिए, ऐश्वर्य, धन धान्य, पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति तथा अपने किसी कार्य की सिद्धि हेतु जो दान दिया जाता है उसे काम्य दान कहते हैं।

विमल दान : भगवान की प्रीति प्राप्त करने के लिए निष्काम भाव से बिना किसी लौकिक स्वार्थ के लिए दिया जाने वाला दान विमल दान कहलाता है। देश, काल और पात्र को ध्यान में रख कर अथवा नित्यप्रति किया गया दान अधिक कल्याणकारी होता है। यह सर्वश्रेष्ठ दान है। देवालय, विद्यालय, औषधालय, भोजनालय, अनाथालय, गोशाला, धर्मशाला, कुएं, बावड़ी, तालाब आदि सर्वोपयोगी स्थानों पर निर्माण आदि कार्य यदि न्यायोपार्जित द्रव्य से बिना यश की कामना से किए जाएं तो परम कल्याणकारी सिद्ध होंगे। न्यायपूर्वक अर्जित धन का दशमांश मनुष्य को दान कार्य में ईश्वर की प्रसन्नता के लिए लगाना चाहिए। दानशील मनुष्य वही होता है जो करुणावान हो, त्यागी हो और सत्कर्मी हो। एक अच्छे मानव में ही दानशीलता का गुण होता है। जिसके हृदय में दया नहीं वह दानी कभी नहीं हो सकता और वह दान ऐसा हो जिसमें बदले में उपकार पाने की कोई भावना न हो। दाधीचि का दान, कर्ण का दान और राजा हरिश्चंद्र के दान ऐसे ही दान की श्रेणी में आते हैं। अथर्ववेद के एक श्लोक में लिखा है कि सैकड़ों हाथों से कमाना चाहिए और हजार हाथों वाला होकर समदृष्टि से दान देना चाहिए। किए हुए कर्म का और आगे किए जाने वाले कर्म का विस्तार इसी संसार में और इसी जन्म में करना चाहिए। हमें इसी संसार में और इसी जन्म में जितना संभव हो सके, दान करना चाहिए। यदि हम ईश्वर की अनुभूति के अभिलाषी हैं तो हमें उसकी संतान की सहायता हरसंभव करनी चाहिए। ईश्वर का अंश हर मानव में मौजूद है। हमारा कर्तव्य है कि हम उसके बनाए जीव की यथासंभव सहायता करें। यदि हम प्रकृति से कुछ सीख लें तो वृक्ष भी परोपकार के लिए फल देते हैं। नदियों का जल भी परोपकार के लिए होता है। शास्त्रों में परोपकार का फल अंतःकरण की शुद्धि के लिए जरूरी कहा गया है। यह सच ही है, क्योंकि परोपकार और दान हम तभी करते हैं, जब हम सब प्राणियों के प्रति आत्मवत हों। हम यह अहसास करें कि हर जीव परमात्मा की संतान होने के नाते एक दूसरे से जुड़ा है। इसलिए दूसरे की पीड़ा जब हम स्वयं में महसूस करेंगे तभी दूसरों की सहायतार्थ आगे बढ़ेंगे। दूसरों की वेदना से व्यथित व्यक्ति ही सहृदयी हो सकता है। जो कोमल भावनाएं अपने अंतर्मन में रखता है, वह दैवीय गुणों से संपन्न है और जब दैवीय गुण अंतस में पनपते हैं तो अंतःकरण स्वतः शुद्ध हो जाता है। यह निर्विकार सत्य है कि हम अगर दूसरों की सहायता करते हैं तो हमें शांति मिलती है। दानशीलता भी सत्य धर्म है। रामचरितमानस में तुलसीदास कहते हैं कि परहित के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है। कहते हैं विद्यादान महादान यानी विद्या का दान सर्वोपरि है। यदि हम धन से वस्त्र का दान देंगे, तो वह बहुत बड़ा दान नहीं, किंतु यदि हम किसी दूसरे व्यक्ति को विद्या का दान देते हैं तो इससे उसका सारा जीवन सुखमय हो जाएगा। किसी के मन का अंधकार दूर कर ज्ञान का आलोक देना ब्रह्मादान है।

देना तो हमें प्रकृति रोज सिखाती है, सूर्य अपनी रोशनी, फूल अपनी खुशबू, पेड़ अपने फल, नदियाँ अपना जल, धरती अपना सीना छलनी कर के भी दोनों हाथों से हम पर अपनी फसल लुटाती है। इसके बावजूद न तो सूर्य की रोशनी कम हुई, न फूलों की खुशबू, न पेड़ों के फल कम हुए न नदियों का जल।

कहा जाजा है कि दान के समान विधि या श्रेष्ठ वस्तु और कोई नहीं है और कुछ भी नहीं है। दान का साधारण अर्थ है किसी वस्तु पर से अपना अधिकार समाप्त करके दूसरे का अधिकार स्थापित करना। इसके बदले में कोई भी वस्तु नहीं ली जाती। दान का तात्विक अर्थ है-अपने द्वारा न्याय के रास्ते से उपार्जित अन्न-धन आदि देने योग्य पदार्थ को अपनी शक्ति के अनुसार सत्पात्र को देना। अपनी संपत्ति को दूसरों की संपत्ति बना देना। किन्तु दान की पूर्ति तभी मानी जाती है जब कि दान में दी हुई वस्तु पर पाने वाले का अधिकार स्थापित हो जाय। पाने वाले के पाने के पहले ही वह वस्तु नष्ट हो जाय तो वह दान नहीं है।

दान कई प्रकार के हैं, जैसे अन्न-दान, जल दान, धन दान, प्राण दान, क्षमा दान, अभयदान आदि। आधुनिक युग में तो और भी कई दानों के नाम जुड़ गये हैं-जैसे-जीवन दान, भूमि-दान, समय दान, श्रम दान, रक्त दान, नेत्र दान आदि। ये तो सब नये अभियान (प्रयत्न) हैं जो चलाये जाते हैं। दानों में अन्न दान का बड़ा महत्व है। किन्तु सच्चा दान दो प्रकार के होते हैं-एक वह जो श्रद्धा से दिया जाता है, दूसरा वह जो दया से दिया जाता है। पंडितों और विद्वानों को जो दान दिया जाता है, वह श्रद्धावश दान है। अंधों, लूलों और लंगड़ों को जो दान दिया जाता है, वह दयावश दिया जाता है। श्रद्धावश दिया जाने वाला दान ही महत्वपूर्ण दान है। श्रद्धावश दिया दान ही सफल माना जाता है। अश्रद्धा से दिया दान निष्फल माना जाता है।

गीता में दान की तीन कोटियाँ कही गई हैं- उत्तम, मध्यम और अधम दान। बिना किसी के याचन किये हुए स्वयं जाकर जो दान दिया जाता है वह सर्वोत्तम है। बुलाकर देना मध्यम है, माँगने पर देना अधम है। अवहेलना और श्रद्धा के बिना दिया दान भी अधम है। सेवा कराकर देना तो सर्वथा निष्फल और व्यर्थ है।

अतः हमें पूर्ण प्रसन्नता से दान देना चाहिए। श्रद्धा से भरे दान की महिमा है। यह दान थोड़ा होने पर भी थोड़ा नहीं है। इस थोड़े दान से भी भगवान प्रसन्न हो जाते हैं। यह दान कभी नष्ट नहीं होता। दान ही मानव जाति को अन्न प्रदान करता है। किन्तु अब कलियुग है। आज के युग में चाहे मन से इच्छा भी न हो जबरदस्ती किसी के डर से किया हो, जैसा भी हो दान कल्याण ही करेगा।

दानों में अन्न दान का बड़ा महत्व है। किन्तु सच्चा दान दो प्रकार के होते हैं-एक वह जो श्रद्धा से दिया जाता है, दूसरा वह जो दया से दिया जाता है। पंडितों और विद्वानों को जो दान दिया जाता है, वह श्रद्धावश दान है। अंधों, लूलों और लंगड़ों को जो दान दिया जाता है, वह दयावश दिया जाता है। श्रद्धावश दिया जाने वाला दान ही महत्वपूर्ण दान है।

श्रुति की आज्ञा है कि अपने ऐश्वर्य के अनुसार श्रद्धा, अश्रद्धा, लज्जा अथवा डर से, जानकर या अनजाने में चाहे जैसे दे, पर दान अवश्य देना चाहिए।

पाने वाले की आवश्यकता के समय दान न देकर बाद में देना बेकार है, क्योंकि तब तक पाने वाला का काम बिगड़ चुका होता है।

पात्रोचित दानः- महाभारत में विस्तार से बताया है कि भूखे को भोजन और प्यासे को पानी देने के अतिरिक्त अन्य सभी दानों में पात्र-अपात्र का, देश, काल इन सब बातों पर विचार कर लेना चाहिए। सत्पात्र को दिया दान कभी नष्ट नहीं होता। श्रद्धावान पुरुष न्याय से प्राप्त अपने धन का सत्पात्र के लिए जो दान करते हैं वह थोड़ा भी हो, तो भी उसी से भगवान प्रसन्न हो जाते हैं।

निकृष्ट दानः- निकृष्ट दान वह है जिसमें देने वाले का लाभ हो किन्तु, पाने वाला नष्ट हो जाय। किन्तु अंतिम परिणाम, जो हाथ उठाकर मछलियों को फंसाने के लिए जल में दाना देते हैं यानी चारा देते हैं उस दान को पाने वाली मछलियाँ तो जीती नहीं हैं, और वह दाता भी नरकों में जाता है।

माँगकर लाई हुई, धरोहर के रूप में रखी हुई, दान में मिली, वस्तु या धन को दूसरों को दान में देना वर्जित है। जो स्वयं दीन है, वह दानी नहीं हो सकता। वास्तव में कुटुंब के भार, भरण, पोषण के बाद जो बचता हो वही वस्तु दान करने योग्य है। हम भगवान से प्रार्थना करें कि वे हमें इतना दें कि हम अपना भी पेट भर लें और दूसरों का भी भरें।

मनुष्य को मरते समय शरीर को नश्वर जानकर दान करना चाहिए। इस दान से यम लोक रास्ते में आप सभी प्रकार के आराम को प्राप्त करते हैं। जहां ब्राह्मण उपलब्ध नहीं हैं, वहां मूर्तियों में रहने वाले देवता को दान करना चाहिए। मूर्तियों में रहने वाले देवता से दान का फल बहुत देर से मिलता है, तो मनुष्य को ब्राह्मण, जरूरतमंद, गरीब को दान करना चाहिए जिसका फल तुरन्त ही अवश्य मिलता है।

आज हमें जिस प्रकार का वातावरण सर्वत्र दिखाई दे रहा है वह वास्तव में दान की महिमा को प्राण प्रतिष्ठित करने की बजाय व्यवसाय सा प्रतीत होता दिख रहा है। परिणामतः दान की महिमा तो तभी होती है जब वह निस्वार्थ भाव से किया जाता है। अगर हम किसी को कोई वस्तु दे रहे हैं लेकिन देने का भाव अर्थात इच्छा नहीं है तो वह दान झूठा हुआ, उसका कोई अर्थ नहीं। दान का

सच्चा अर्थ यही है कि देने में आनंद, एक उदारता का भाव, प्राणी मात्र के प्रति एक प्रेम एवं दया का भाव है किन्तु जब इस भाव के पीछे कुछ पाने का स्वार्थ छिपा हो तो क्या वह दान रह जाता है? गीता में भी लिखा है कि कर्म करो, फल की चिंता मत करो हमारा अधिकार केवल अपने कर्म पर है उसके फल पर नहीं।

अत: देने की इस क्रिया से हम कुछ हद तक अपने मोह पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। दान देना हमारे विचारों एवं हमारे व्यक्तित्व पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। इसलिए हमारी संस्कृति हमें बचपन से ही देना सिखाती है न कि लेना। हमें अपने बच्चों के हाथों से दान करवाना चाहिए, ताकि उनमें यह संस्कार बचपन से ही आ जाएं। देना तो हमें प्रकृति रोज सिखाती है, सूर्य अपनी रोशनी, फूल अपनी खुशबू, पेड़ अपने फल, नदियाँ अपना जल, धरती अपना सीना छलनी कर के भी दोनों हाथों से हम पर अपनी फसल लुटाती है। इसके बावजूद न तो सूर्य की रोशनी कम हुई, न फूलों की खुशबू, न पेड़ों के फल कम हुए न नदियों का जल। अत: दान एक हाथ से देने पर अनेक हाथों से लौटकर हमारे ही पास वापस आता है, बस शर्त यह है कि निस्वार्थ भाव से श्रद्धापूर्वक समाज की भलाई के लिए किया जाए। ❐

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक हैं।)

दान की महिमा

■ **डॉ. शिवाली**

कई वर्ष पहले एक राज्य में एक राजा था। एक दिन उसके मन में विचार आया कि यह जानना चाहिए कि इंसान की मृत्यु के बाद उसके साथ क्या होता है और उसको कैसा महसूस होता है। अगले दिन उसने पूरे राज्य में घोषणा करवा दी कि जो भी व्यक्ति यह बताएगा कि मरने के बाद क्या होता है उसको मैं दस हजार स्वर्ण मुद्राएं दूंगा। उसी राज्य में एक कंजूस किन्तु अमीर व्यक्ति रहता था। बहुत सारा धन होने के पश्चात् भी वो और अधिक सम्पत्ति कमाने का इच्छुक था। किसी की सहायता करना, दान देना उसको आता ही न था। धन के लोभ में वो राजा के सामने जा पहुंचा। राजा ने कहा कि तुम्हें कब्रिस्तान में मरे हुए व्यक्ति की तरह दफनाएंगे और उसके बाद तुम्हें मुझे बताना होगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ।

कंजूस व्यक्ति को सजी हुई अर्थी पर लेटाया गया और कब्रिस्तान की ओर ले जाने लगे। एक फकीर जो उधर से गुजर रहा था उसने जोर से कहा कि अरे लालची और कंजूस व्यक्ति। तेरे पास इतनी सम्पत्ति है और वैसे भी तू मरने वाला है, मुझे कुछ दान दे देकर जा। ऐसा कहता हुआ वो अर्थी के पीछे-पीछे चलता रहा।

फकीर को चुप करवाने के इरादे से अर्थी से उतरते वक्त उस कंजूस ने हार कर फकीर को कुछ बादाम के छिलके दे दिए। कुछ समय बाद उस व्यक्ति को शर्त के अनुसार कब्र में दफना दिया गया और केवल एक छेद कब्र में किया गया जिससे वो व्यक्ति सांस ले सके। रात में जब वह व्यक्ति उस कब्र में दफन था तभी एक सांप उस कब्र के पास आया और छेद से अंदर झांकने लगा। छेद से सांप कब्र में घुसने लगा। सांप को इतना करीब देख कर कंजूस व्यक्ति थर-थर कांपने लगा और उसके प्राण पखेरू उड़ने लगे। तभी कब्र के पास एक बादाम का वृक्ष था, उस पर से कुछ बादाम गिर कर छेद पर गिरे और वो छेद बंद हो गया और सांप प्रवेश नहीं कर पाया।

सुबह राजा के सैनिक कंजूस व्यक्ति को कब्र से निकाल कर राजा के महल ले जाने आए। लेकिन वो कंजूस व्यक्ति सबसे पहले अपने घर गया और सारी धन-सम्पत्ति गरीबों में बांटने के बाद राजा के समक्ष प्रस्तुत हुआ। राजा को रात का सारा वृतांत सुनाया और कहा कि राजन वास्त में दान ही सबसे बड़ा धर्म होता है। दान किए कुछ बादाम के छिलकों ने मेरी जान बचायी। वास्तव में दान ही हमारे काम आता है । अगर मैं इस दुनिया से चला जाता तो इतनी सम्पत्ति -धन-दौलत किसके काम आती। न मैं न कोई और परिवारजन उपयोग करता या सुखी रह पाता। वास्तव में दान की महिमा ही सबसे बड़ी है और दान से जो सुरक्षा कवच मैंने जीवन में पाया वो सभी पाएं, मैं बस इतना ही चाहता हूँ।

दानवीर भामाशाह का राष्ट्रप्रेम

■ आचार्य अनमोल

इस चराचर के समस्त सामाजिक कार्य आपस में सहयोग के द्वारा ही चलते हैं। यह बात मानव-जीवन में हर जगह घटित होती है। सहयोग का वास्तविक अर्थ दान है। यह दान केवल धन का ही नहीं होता अपितु अच्छे वचनों का भी होता है, किसी भूले भटके व्यक्ति को राह दिखाने का भी होता है और किसी तरह की मानवीय सहायता करके भी दान का वास्तविक अर्थ उजागर होता है।

दान में सबसे बड़ा दान विद्या दान को माना जाता है। दान देने के क्रम में बहुत सारे नाम आ जाते हैं- वस्त्र दान, कन्यादान धन दान, अन्न दान आदि। इन सभी दानों में विद्यादान के बाद में धन दान का ही प्रमुखता से नाम आता है क्योंकि जीवन के सभी कार्य धन के माध्यम से ही होते हैं। जो धन-दान देता है वास्तव में वह दानी कहलाता है।

अपने भारत देश में दान देने की बहुत महिमा है। हमारे पुराणों में दान देने के विषय में अनेक लोगों के नाम बड़े सम्मान के साथ उल्लखित हैं। उनमें सर्वप्रथम राजा बली का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इसी तरह देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले परमवीर महाराणा प्रताप की सहायता करने के लिए भामाशाह ने अपना सब कुछ उनको धन के रूप में दान कर दिया था। इसीलिए आज उनको दानवीर के रूप में स्मरण किया जाता है। दानवीर भामाशाह का यश हम सभी के सामने एक आदर्श बना हुआ है।

समाज में जो भी दान देते हैं, हम उनको भी इस 'भामाशाह' पावन नाम से अलंकृत करते हैं।

दानवीर भामाशाह का जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में वर्तमान पाली जिले के सादड़ी गाँव में 29 अप्रैल 1547 को ओसवाल जैन परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम भारमल था जो रणथम्भौर के किलेदार थे।

भामाशाह का निष्ठापूर्ण सहयोग महाराणा प्रताप के जीवन में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ। मातृ-भूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए अपनी सम्पूर्ण धन-संपदा अर्पित कर दी। यह सहयोग तब दिया जब महाराणा प्रताप

अपना अस्तित्व बनाए रखने के प्रयास में निराश होकर परिवार सहित पहाड़ियों में छिपते भटक रहे थे। मेवाड़ की अस्मिता की रक्षा के लिए दिल्ली गद्दी का प्रलोभन भी ठुकरा दिया। महाराणा प्रताप को दी गई उनकी हर सम्भव सहायता ने मेवाड़ के आत्म सम्मान एवं संघर्ष को नई दिशा दी।

वे एक आदर्श दानवीर एवं त्यागी पुरुष थे। आत्मसम्मान और त्याग की यही भावना उनके स्वदेश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देश-भक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है। धन अर्पित करने वाले किसी भी दानदाता को दानवीर भामाशाह कहकर उसका स्मरण-वंदन किया जाता है। उनकी दानशीलता के चर्चे आज बड़े उत्साह, प्रेरणा के संग सुने-सुनाए जाते हैं।

भामाशाह बाल्यकाल से मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी और विश्वासपात्र सलाहकार थे। अपरिग्रह को जीवन का मूलमंत्र मानकर संग्रह की प्रवृत्ति से दूर रहने की चेतना जगाने में वे सदैव अग्रणी रहे। मातृ-भूमि के प्रति अगाध प्रेम था और दानवीरता के लिए भामाशाह नाम इतिहास में अमर है।

भामाशाह अपनी दानवीरता के कारण इतिहास में अमर हो गए। भामाशाह के सहयोग ने ही महाराणा प्रताप को जहाँ संघर्ष की दिशा दी, वहीं मेवाड़ को भी आत्मसम्मान दिया। हल्दी घाटी के युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप के लिए उन्होंने अपनी निजी सम्पत्ति में इतना धन दान दिया था कि जिससे 25000 सैनिकों का बारह वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। प्राप्त सहयोग से महाराणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हुआ और उन्होंने पुन: सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित किया और फिर से मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया। उनके लिए पंक्तियाँ कही गई हैं-

धन्य-धन्य वह मात बड़ी,
जिसने भामाशाह को जन्म दिया,
दान-वीरता की मूरत बन,
राष्ट्र-धर्म को बड़ा किया।।

ऐसी विरल ईमानदारी एवं स्वामि भक्ति के फलस्वरूप भामाशाह के बाद उनके पुत्र जीवाशाह को महाराणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने भी प्रधान पद पर बनाये रखा। जीवाशाह के उपरांत उनके पुत्र अक्षयराज को अमर सिंह के पुत्र कर्ण सिंह ने प्रधान पद पर बनाये रखा। इस तरह एक ही परिवार की तीन पीढ़ियो ने मेवाड़ में प्रधान पद पर स्वामिभक्ति एंव ईमानदारी से कार्य कर देश का मान बढ़ाया।

लोकहित और आत्मसम्मान के लिए अपना सर्वस्व दान कर देने वाली उदारता के गौरव-पुरुष की इस प्रेरणा को चिरस्थायी रखने के लिए छत्तीसगढ़ शासन ने उनकी स्मृति में दानशीलता, सौहाद्र एवं अनुकरणीय सहायता के क्षेत्र में दानवीर भामाशाह सम्मान स्थापित किया है। महाराणा मेवाड फाऊंडेशन की तरफ से दानवीर भामाशाह पुरस्कार राजस्थान मे मेरिट में आने वाले छात्रों को दिया जाता है। उदयपुर, राजस्थान में राजाओं की समाधि स्थल के मध्य भामाशाह की समाधि बनी है। सरकार द्वारा उनके सम्मान में 31 दिसम्बर 2000 को 3 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया। ❐

“पूरी तरह वश में किया हुआ मन हमारा सबसे अच्छा मित्र होता है। लेकिन, ये अनियंत्रित हो जाए तो सबसे बड़ा शत्रु हो जाता है।”

- श्रीमद् भगवद् गीता

दधीचि देहदान समिति

■ मंजू

देहदान, अंगदान के विषय में सामाजिक चेतना को जागृत करने का काम दधीचि देहदान समिति, दिल्ली पिछले 27 वर्ष से कर रही है। इस समय लगभग 300 कार्यकर्ता ऐसे हैं, जो पूर्ण सेवाभाव से दिन-रात किसी भी समय उपस्थित रहने को तैयार हैं। 20000 लोग, देहदान अंगदान के संकल्प पत्र भरकर अभी समिति के साथ जुड़े हुए हैं। 482 लोगों का देहदान और 1106 का अंगदान समिति अभी तक करवा चुकी है।

आरंभ में श्री आलोक कुमार ने स्वयं अपने पांच साथियों के साथ रजिस्ट्रार के ऑफिस में जाकर अपनी देहदान की विल रजिस्टर की थी। 1993 में जब नानाजी देशमुख ने अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य पर अपनी देहदान की वसीयत करने की इच्छा प्रकट की, तो इस कार्य ने एक समिति का रूप ले लिया। रजिस्टर्ड समिति के प्रथम संकल्पित देहदानी स्वयं श्री नानाजी देशमुख थे। श्री आलोक कुमार इसके संस्थापक अध्यक्ष और वर्तमान में इसके संरक्षक के नाते कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। छोटे-छोटे समूह में व्यक्तियों के साथ चर्चा करके इस विषय को पहुंचाना धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों में अपना एक स्टॉल लगाना, साल भर में संकल्पित व्यक्तियों को एक कार्यक्रम में बुलाकर देहदानियों का उत्सव करना, यह इस समिति की व्यावहारिक कार्यशैली है। समिति दान के इच्छुक व्यक्ति व सरकारी मेडिकल संस्थान के बीच में एक पुल का काम करती है। दान ठीक स्थान पर पहुंचे, बिना किसी कठिनाई के पहुंचे, मृत्यु के समय संवेदना के क्षणों में सरकारी मेडिकल कॉलेज और परिवार का तालमेल सौहार्दपूर्ण वातावरण में हो, ऐसा सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। फोन से दान की व्यवस्था करना, दान के समय परिवार के साथ खड़े होना और उस दानी व्यक्ति की प्रेरणा सभा में इस विषय को समाज में रखना, यह सभी कार्य समिति के समर्पित कार्यकर्ता पूरी लगन व संवेदना से करते हैं।

हर क्षेत्र का 1 साल में अपना एक उत्सव होता है। नैमिषारण्य में महर्षि दधीचि की दानस्थली मिश्रिख तीर्थ की एक यात्रा व वहां पर एक संगोष्ठी और दधीचि कथा भी जागरूकता के कार्यक्रमों में शामिल है। अभी तक समिति की तीन पुस्तक प्रकाशित हुई हैं। एक द्वैमासिक पत्रिका है, जो ऑनलाइन उपलब्ध होती है। समिति की वेबसाइट www.dehdan.org पर देहदान, अंगदान से संबंधित विस्तृत जानकारियां उपलब्ध हैं।

2024 -25 में समिति का लक्ष्य दिल्ली व एनसीआर के विश्वविद्यालयों से जुड़े हुए सभी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तक पहुंचने का है।

बता दें कि चिकित्सा शास्त्र की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को मृत देह की आवश्यकता रहती है। 6 विद्यार्थी एक केडेवर (मृत देह) पर काम करें तो वे भलीभांति सीख पाते हैं। अभी 20 से 30 विद्यार्थियों को एक केडेवर पर काम करना पड़ता है, जो शिक्षा के स्तर पर प्रभाव डालता है। ऐसे ही अंगों के खराब होने से प्रत्यारोपण की इंतजार में रोगियों की एक लंबी पंक्ति है, जिसकी पूर्ति नाम मात्र ही है। सी वोटर के सर्वे ने इस क्षेत्र में काम करने वाली सभी स्वयंसेवी संस्थाओं को यह ध्यान दिलाया है कि अपने देश में 4 साल पहले तक 80% लोगों को इस विषय की जानकारी ही नहीं थी। प्रधानमंत्री द्वारा इस विषय को 'मन की बात' कार्यक्रम में उठाने के बाद से सरकारी तंत्र ने भी गंभीरता से अपना काम करना शुरू किया है और हमारे जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं को भी अनुभव में आया है कि हमारे अभियान की गति भी तेज हुई है। समाज अपनी रूढ़िवादी सोच से ऊपर उठने का प्रयास भी कर रहा है।

समिति के कार्यक्रमों में संकल्पित देहदानियों के लिए एक वेद मंत्र का पाठ किया जाता है- ओम् तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरद:शतम् जीवेम शरद:शतम्...शतात्।।

"हम 100 वर्ष तक स्वस्थ अंगों के साथ जीवन जिएं। कभी दीनता का भाव न आए। यह आयु 100 वर्ष से भी अधिक हो।''

यदि मैंने मृत्यु के बाद अपने देहदान अथवा अंगदान का संकल्प लिया है तो मुझे एक ट्रस्टी के नाते अपनी इन वस्तुओं को एक उपयोगी अवस्था में छोड़ना है। स्वस्थ आयु जीना और उसके बाद स्वस्थ शरीर व अंगों का समाज सेवा में उपयोग होना, इसी भावना के साथ दधीचि देहदान समिति स्वस्थ और सबल भारत के निर्माण में निरंतर आगे बढ़ रही है। ❐

दान की सनातन परंपरा

■ स्वाति पाठक 'स्वाति' (अध्यापिका)

हमारे आर्यावर्त देश में दान देने की सनातन परंपरा रही है। हमारे ऋषि-मुनि दान देने के महत्व को अनेक उदाहरण द्वारा जन सामान्य को समझाते रहे हैं। हमारे अठारह पुराणों में अनेक ऐसी कथाएँ मिलती हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि दान देना कितना जरूरी है।

पाणिनि ने अपने संस्कृत व्याकरण में 'दान' शब्द की व्युत्पत्ति स्पष्ट करते हुए लिखा है कि – 'दा' धातु से दान शब्द बनता है। जिसका अर्थ होता है देना। वास्तव में 'दान' वह क्रिया है जिसमें कुछ भी देकर कभी वापस लिया नहीं जाता। इसलिए जिसको दिया जाता है उसमें 'संप्रदाने चतुर्थी' के नियमानुसार चतुर्थी विभक्ति होती है। इसी तरह जिसको सामान देकर वापस लिया जाता है उसमें द्वितीया विभक्ति होती है।

हमारे शास्त्रों में दान देने की बहुत ही महिमा है। पुराणों में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिसे प्रेरित होकर सामान्य आदमी सहर्ष दान देने को उद्‌यत हो जाता है। दान देने की कड़ी में अनेक ;षियों के नाम बहुत ही प्रसिद्ध है महर्षि दधीचि ने लोक सेवा करने के लिए ही अपनी अस्थियों का दान दे दिया था। राजा शिवि ने न्याय करने के लिए अपने शरीर का मांस दान में दिया। इसी तरह की परंपरा का निर्वाह करते हुए लोग गोदान, धन दान, अन्न दान, विद्‌या दान, वस्त्र दान आदि करते हैं। सही अर्थो में यह भावना ही समाज की सेवा करने में सम्मिलित होती है।

दान देने वालों के कारण आज भी

अनेक संस्थाएँ चल रही हैं। जरूरतमंद और वंचित लोगों की भलाई के लिए समाज के अनेक प्रकल्प दान के सहयोग से ही चल रहे हैं। इसीलिए कहा जाता है कि जो लोग अपने कमाए हुए धन में से दान देते हैं उनका धन निरंतर बढ़ता है, उनका यश संसार में फैसला है, उनका सहयोग जरूरतमंद लोगों को प्राप्त होता है।

वास्तव में दान देना एक परहित की भावना में सम्मिलित माना जाता है। दूसरों की भलाई के विषय में तुलसीदास जी ने लिखा है कि परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधिकाई। समाज के वंचित, उपेक्षित दीन-हीन, साधन विहीन लोगों का हमें किसी भी रूप में सहयोग करना चाहिए। सच्चाई में यही सेवा ही प्रभु सेवा है। दान की महिमा के बारे में पुराणों में लिखा हुआ है –

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च,
सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च,
सप्तभिर्धार्यते मही।।

अर्थात सात चीजों ने इस पृथ्वी को धारण कर रखा है-गाय, शास्त्रों का अध्ययन करने वाला विद्वान, वेद, पतिव्रता नारी, सत्य बोलने वाला व्यक्ति, लोभ न करने वाला व्यक्ति, दानी और वीर। सही अर्थों में देखा जाए तो य सातों घटक ऐसे हैं जिन्होंने पृथ्वी को यानी समाज को आपस में जोड़ा हुआ है। उपर्युक्त श्लोक में दानी की भी महिमा बताई गई है। दानी व्यक्ति नहीं होगा तो यह पृथ्वी रसातल में चली जाएगी। इसलिए दान देने वाले लोगों का महत्व सदा ही रहा है।

दान देने के बारे में संस्कृत में अनेक सूक्तियाँ प्राप्त होती हैं– 'हस्तस्य भूषणम् दानम्' अर्थात हाथ की शोभा दान देने से होती है। 'दानेन पाणिर्न तु कंकणेन' अर्थात हाथ की शोभा दान देने से होती है कंगन से नहीं। दान की महिमा के विषय में इसी तरह की बात गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कही है–

जननी जने तो भक्तजन,
कै दाता कै सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रह,
व्यर्थ गँवावहि नूर।।

यानी माँ को तीन तरह के पुत्रों को ही जन्म देना चाहिए। पुत्र या तो भगवान का भक्त हो, दानी हो या वह शूरवीर हो, यदि यह तीनों तरह के गुण उसके पुत्र में नहीं है तो उसे अपनी संतान को जन्म ही नहीं देना चाहिए।

ऐसा कहा जाता है कि इस जन्म में जो अच्छे कर्म करता है, वह उसे परलोक में पुण्य के रूप में प्राप्त होता है। इसलिए दान देने से बढ़िया कोई अच्छा कर्म नहीं है। जो दान देता है उसे निश्चित ही परलोक में पुण्य की प्राप्ति होती है। ❐

जागृति महिला स्वावलम्बन

■ डॉ. शिवाली अग्रवाल

जीवन में आत्मनिर्भरता का क्या महत्व है, इसी बात को समझते हुए और विकास से दूर महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लक्ष्य से शिल्पा वेरनेकर ने बेडगाँव, कर्नाटक में जागृति महिला स्वावलम्बन की स्थापना की। बेडगाँव में मूलतः साड़ी बुनकर समाज की बहुलयत है। अधिकतक बुनकर समाज के लोग दूसरे राज्यों से यहां आते हैं और बुनाई का कार्य कर जीवनोपार्जन करते हैं। इस समाज की सबसे बड़ी कुरीति में से एक है - लड़कियों का छोटी उम्र में विवाह। छोटी उम्र में विवाह के कारण इस क्षेत्र में बाल-विधवाएं अनेक हैं। लड़कियां छोटी आयु में बच्चों सहित दर-दर की ठोकरें खाने पर बाध्य कर दी जाती हैं। युवतियों की पीड़ा यही नहीं रुकती। विवाह के नाम पर उनको बेचने की प्रथा ने यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही इन युवतियों का जीवन नरक बनाने मे कोई कसर न छोड़ी थी। चेन्नई, झारखण्ड, हरियाणा, राजस्थान जैसे कई राज्यों में यहां की किशोरियों को बेचा जाने लगा। जब यह स्थिति भयावह हो चली और कोई भी रास्ता न बचा, तब संघ के प्रयत्न, सोच और पहल से 'जागृति महिला स्वावलम्बन' की स्थापना बेडगाँव, कर्नाटक में की गई।

2009 में महिलाओं की शिक्षा, जीविका, स्वावलम्बन, हुनर और कौशल विकास के लिए जागृति महिला स्वावलम्बन की कल्पना की गई। जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक ये सभी चीजें एक ही साथ सुलभ नहीं हो सकतीं, लेकिन कर्नाटक के बेडगाँव से संचालित इस विशेष प्रकल्प ने महिलाओं को सिलाई मशीन प्रशिक्षण, कटिंग, प्लेरिंग, बुनाई, कढ़ाई, स्वास्थ्य जागरूकता के लिए विशेष प्रावधान शुरू किए।

शिल्पा वेरनेकर जी, जो कि नेशनल डिजाईनिंग की सहायक प्रोफेसर थीं, ने स्थिति की गंभीरता का अवलोकन किया और अपना सम्पूर्ण जीवन इन बाल विधवाओं और छोटी उम्र में विवाह के नाम पर बेची जानी वाली युवतियों के जीवन उद्धार में लगा दिया। सिलाई प्रशिक्षण के साथ कपड़े के थैले बनाना भी शुरू किया। बाजारीकरण और चकाचौध के युग में अत्यधिक सरल डिजाईन और बनावट के चलते शुरुआत में उत्पाद बिकने में कठिनाई आई, परन्तु संघ के प्रयास से अति शीघ्र यह समस्या भी सुलझ गई। महिलाएं संघ वाले भाइयों के लिए गणवेश बनाने लगी। गणवेश सिलकर संघ को उपलब्ध करवाए जाते और इस प्रकार से कार्य ने गति और मनोबल दोनों पकड़ा। संघ के प्रोत्साहन से 2-3 विद्यालयों के सम्पर्क में आने के पश्चात् विद्यार्थियों की वेशभूषा का कार्य महिलाओं को मिलने लगा।

> **पहले केवल सिलाई-कढ़ाई, राखी बनाने पर जोर था, अब समय- मांग और ऋतु के अनुसार महिलाओं को शिक्षा-प्रशिक्षण दिया जाने लगा। प्रकल्प के शुरू होने से 4-5 वर्ष में ही 600 से अधिक युवतियां एवं महिलाएं स्वावलम्बी हुई हैं। प्रशिक्षण लेते हुए ही लगभग 60-70 प्रतिशत महिलाएं आत्मनिर्भर होने लगती हैं।**

बहुत सी महिलाएं एवं युवतियां सिलाई में पारंगत नहीं हुई या कुछ और सीखना चाहती थीं, उनके लिए रेशम की राखी बनाने का प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया गया। भगवा रंग की राखी बना कर यं बहनें संघ को पहुंचा देती थीं। प्रतिवर्ष 8-10 लाख राखियों का उत्पादन किया जाने लगा। जैसे-जैसे महिला स्वावलम्बी होती गई, केन्द्र का विस्तार होता गया। अनेक प्रकार के प्रशिक्षण शुरू किए गए। समाचार पत्र, पुरानी पत्रिकाओं के कागज से कागज के लिफाफे बनाने का कार्य शुरू किया गया। अधिक मात्रा में उत्पादन करके ये कागज के लिफाफे मेडिकल स्टोर और दुकानों पर भेजे जाने लगे। महिलाओं को अच्छी आमदनी होने लगी। स्वावलम्बन के बढ़ते कार्यो के मद्देनजर बेडगाँव में 9 स्वावलम्बन केन्द्र शुरू कर दिए गए। पहले केवल सिलाई-कढ़ाई, राखी बनाने पर जोर था, अब समय- मांग और ऋतु के अनुसार महिलाओं को शिक्षा-प्रशिक्षण दिया जाने लगा। प्रकल्प के शुरू होने से

4-5 वर्ष में ही 600 से अधिक युवतियां एवं महिलाएं स्वावलम्बी हुई हैं। प्रशिक्षण लेते हुए ही लगभग 60-70 प्रतिशत महिलाएं आत्मनिर्भर होने लगती हैं।

स्वावलम्बन के साथ-साथ यह प्रकल्प महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार, शोषण और व्यसनों से भी समाज को सचेत करता है। बाल विवाह, शादी के नाम पर लड़कियों को बेचने से भी ज्यादा घोर कुकृत्य है- 'लव जिहाद।' मजहब का सहारा लेकर किशोरियों के तन-मन और सम्मान से खेलना, उनको भ्रमित कर भगा ले जाना और फिर उनका जीवन बर्बाद कर उन्हें छोड़ जाना, यह समान्य प्रक्रिया हो गई थी किशोरियों के साथ। धर्म जागरण वाले बड़ी कठिनाइयों से उन किशोरियों को वापस लाते। वापिस ले तो आते, पर समाज, परिवार और मित्रजन उन लड़कियों को स्वीकार नहीं करते। ऐसे में जागृति महिला स्वावलम्बन केन्द्र उनको न केवल छत प्रदान करते हैं, अपितु उनका मार्गदर्शन, मनोवैज्ञानिक परीक्षण करवाकर उनको सही रास्ते पर लाने का कार्य भी करते हैं। शिल्पा जी ने बताया कि केवल सही दिशा से उन भ्रमित युवतियों को लाने का काम ही नहीं, अपितु उन लड़कियों की पुनः शादी करवाना, उनका घर बसाना भी।

छोटी उम्र की विधवा बेटियों और अन्य महिलाओं को स्वावलम्बन के रास्ते पर डालते हुए, एक अन्य समस्या सामने आने लगी। छोटी बच्चियों को कहां छोड़े? बेडगाँव में अधिकतर परिवार मजदूरी करके अपना भरण-पोषण करते हैं। ऐसे भी छोटी बच्चियों की दुर्गति होती थी। वे न विद्यालय जा पाती थीं, न कोई और कौशल सीख पाती थीं और जितना वे किशोरियां घरों पर या इधर-उधर घूमती थीं, उनता ही उनके शीघ्र विवाह की या भ्रमित होने की संभावना अधिक बढ़ जाती थी। इसके लिए 'किशोरी विकास केन्द्र' की स्थापना 2010 में की गई। 2023 तक बेडगाँव में 35 किशोरी विकास केन्द्र सफलतापूर्वक चल रहे थे। इन केन्द्रों पर लड़कियों और छोटी बच्चियों को शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा, संस्कार, क्राफ्ट, कराटे योग सिखाया जाता है। प्रतिदिन 2 घंटे की कक्षाएं लगाई जाती हैं। अलग-अलग बस्ती में ये केन्द्र चल रहे हैं मन्दिर के प्रांगण, घर, चौक इत्यादि स्थानों पर। महाविद्यालय जाने वाली युवतियां इन केन्द्रों को संभालती हैं। इन बालिकाओं को केवल प्रतिदिन व्यस्त रखने वाला विषय नहीं है, अपितु किसी भी प्रकार से स्वावलम्बी बनाना है। इसी सोच के साथ इन किशोरियों को अनेक शिक्षण दिए जाने लगे जैसे मेहंदी लगाना, एम्ब्रायडरी करना, फूल-बत्ती बनाना, फैशन डिजाइनिंग, प्रतियोगिता की तैयारी जैसे बैंक पी.ओ., एसएससी की कोचिंग इत्यादि। इन्हीं केन्द्रों पर चाहे ये किशोरी विकास केन्द्र हों या महिला स्वावलम्बन केन्द्र, नियमित रूप से यहां भजन-कीर्तन के कार्यक्रम होते हैं । समाज पर इसका बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है । इस राज्य में धर्म परिवर्तन की समस्या बहुत है। पैसे और कुछ अन्य तुच्छ लाभ के लिए हिन्दू भाई बहिनों को ईसाई धर्म में परिवर्तन के कई मामले आए दिन सामने आते हैं। इन केन्द्रों पर चल रही ऊर्जावान गतिविधियों की वजह से समाज में अच्छे विचार सम्मिलित हो रहे हैं। नशा करना, जुआ खेलना, नशा करके परलोक सिधार जाना यहां के पुरुषों के लिए साधारण बात थी। अब स्थिति परिवर्तित हो रही है। महिलाओं ने नशा-मुक्ति के लिए भी सकारात्मक पहल की है।

स्वावलम्बन के बढ़ते कार्यो के मद्देनजर बेडगाँव में 9 स्वावलम्बन केन्द्र शुरू कर दिए गए। पहले केवल सिलाई-कढ़ाई, राखी बनाने पर जोर था, अब समय- मांग और ऋतु के अनुसार महिलाओं को शिक्षा-प्रशिक्षण दिया जाने लगा। प्रकल्प के शुरू होने से 4-5 वर्ष में ही 600 से अधिक युवतियां एवं महिलाएं स्वावलम्बी हुई हैं। प्रशिक्षण लेते हुए ही लगभग 60-70 प्रतिशत महिलाएं आत्मनिर्भर होने लगती हैं।

क्षेत्र की महिलाओं एवं कारीगरों को रोजगार मिल रहा है। बाल विधवाओं के सांस्कृतिक एवं आर्थिक संवर्धन हेतु निरन्तर कार्य हो रहा है। महिलाओं द्वारा नियमित रोजगार के अवसर का लाभ उठाया जा रहा है । इस अभियान का सकारात्मक परिणाम यह रहा कि महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। शिल्पा विरनेकर जी और उनके साथ कार्य करने वाली बहनों के साथ केवल औपचारिक संबंध की अपेक्षा आत्मीय भाव रखती हैं और हर सुख-दुख

में एक-दूसरे का ध्यान रखती हैं। इस आपसी बंधन के कारण बड़ी मात्रा में महिलाएं आर्थिक निर्भरता को निरन्तर आगे बढ़ रही हैं। प्रकल्प के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के लिए किये गए अतुलनीय योगदान हेतु बेडगाँव स्थित जागृति महिला स्वावलम्बन का नाम बड़े आदर सम्मान से लिया जाता है।

शकुन्तला हेम्पनाटवर (52 वर्ष), दीपा नन्दीहल्ली (42 वर्ष), हर्षिता लंगोटी (20 वर्ष)- ये वे कुछ नाम हैं जो गर्व से कहती हैं कि हम अपना जीवन धन्य और परिपूर्ण मानते हैं कि हम जागृति महिला स्वावलम्बन केन्द्र एवं किशोरी विकास केन्द्र से जुड़े। न केवल इनके व्यक्तिगत जीवन में अपितु समस्त परिवार में भी प्रसन्नता का वातावरण है। स्वावलम्बन से आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक और अन्य कई मानकों पर ये महिलाएं सफललता के नित्य नए परचम लहरा रही हैं।

यहाँ आई कई महिलाएं एवं किशोरियाँ 'सेवित' से सेवा करने योग्य में कब परिवर्तित हुई, वे स्वयं अभिभूत हैं। समाज के प्रति समर्पण यहां की प्रत्येक महिला के अस्तित्व का हिस्सा बन चुका है। उनकी कर्तव्य-निष्ठा एवं जवाबदेही इस बात से ही स्पष्ट होती है कि प्रत्येक महिला अन्य महिलाओं को अपनी क्षमता अनुसार सहयोग प्रदान करके स्वयं को अभिभूत समझती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महिला स्वावलम्बी बन राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक वृद्धि कर रही है। जागृति महिला स्वावलम्बन अन्य गतिविधियों जैसे-सांस्कृतिक गतिविधियों, अभ्यास वर्ग, पाठ्कीय गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी से उत्साहजनक कार्यक्रम कर रहा है। 'सेवा' और 'स्वावलम्बन' को लेकर स्थापित यह संगठन महिला, किशोरी और पथ-भ्रमित समाज के लिए भी निरंतर सक्रिय है। महिला सशक्तिकरण के साथ ही विशेषकर उपेक्षित, धर्म परिवर्तन को विवश, कच्ची उम्र में विवाह को मजबूर बहनों के स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित करते हुए उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है । इसी सेवा भाव को चरितार्थ करती जागृति महिला स्वावलम्बन से जुड़ी प्रत्येक महिला/ किशोरी अपना एक अलग किरदार गढ़ रही है।

जीवन में न रुको कभी,
सतत् ही आगे बढ़ो।
करना है कुछ अद्वितीय जगत में
तो अलग, अपना किरदार बढ़ो॥
दूसरों के पथ पर अनुसरण,
मत करो कभी इस जग में।
करना है तो स्वयं ही
नवीन पथ का निर्माण करो॥
रहे भरोसे दूसरों के,
अकसर हार वो जाते हैं।
स्वावलम्बी बनो, अजेय बनो,
स्वयं अपना किरदार बढ़ो॥ ❐

परमात्मा तुल्य हमारे दानदाता

■ **दीप्ति अग्रवाल**

सेवा भारती परिवार एक बहुत ही विशाल वट वृक्ष की तरह समाज में फैला हुआ है। इस परिवार में सभी लोग सेवाभाव मन में रखने वाले होते हैं। उनमें से दान दाताओं का भी एक बड़ा समूह है, जो कि कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में हमारी मदद हेतु आते हैं। उन्हें बदले में कुछ चाहिए भी नहीं। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है, नर सेवा नारायण सेवा। दूसरों के कष्ट को देख कर अपने मन में पीड़ा जागृत हो, इससे बड़ा तो कोई भाव ही नहीं है। पर भाव होने के बाद भी सेवा भारती के भावों का कार्यान्वयन भी हो पाए उसके लिए धन की आवश्यकता होती है। धन के बगैर तो कुछ नहीं और इस धन की पूर्ति हेतु हमारे दानदाता आगे आते हैं। ये सेवाभावी लोग तन से नहीं, अपितु मन से अपना कर्तव्य निभाते हैं। यह समाज का वह वर्ग है जो कि अपने कार्य की वजह से अपने आपको समाज के सबसे ऊँचे स्थान पर आसक्त पाता है। नाम, शोहरत पाने की वजह से नहीं है, किंतु अपने कार्यों से, अपने भाव की वजह से, वे अपने आपको भगवान के सबसे निकट पाते हैं। हिन्दू धर्म की नींव में भी यही सेवाभाव है। जिसे हमें सिखाने व सीखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, यह हमारी आत्मा में विद्यमान है व यह स्वत: ही हम सब में आ जाता है। दिन की शुरुआत पहली रोटी गाय की और दिन के आखिर में अंतिम रोटी कुत्ते की। पर आज के इस भौतिक समाज में हम ये सब कुछ हद तक भूलते जा रहें है। जो कि हमें आगे आने वाली पीढ़ियों को सिखाना अनिवार्य है। ❐

सेवा भारती ने बदली जिंदगी

■ इन्दिरा राय

चिलचिलाती धूप में सेवा बस्ती में किसी आवश्यक काम से जाना हुआ। अभी मैं रास्ते में ही थी कि एक स्कूटी आकर मेरे पास रुकी। मैंने आश्चर्य से देखा एक 32-35 वर्ष की महिला करिने से साड़ी का पल्लू ओढ़े हुये स्कूटी से उतर कर मुझे प्रणाम करने लगी। आशीर्वाद देने के बाद जब मैंने ध्यान से देखा तब दीदी मैं कविता हूं यही पास की बस्ती में रहती हूं। सेवा भारती ने तो मेरी जिन्दगी ही बदल दी है। मेरे मन में बहुत से प्रश्न उठ रहे थे। मैंने पूछा जरा विस्तार से बताओ तुम्हारे जीवन में क्या परिवर्तन आया है? कैसे आया है? उसने कहा चलिये केन्द्र पर चलते हैं, वही बैठ कर मैं आपको पूरी बात बताती हूं। हम केन्द्र पर पहुंचे तो शिक्षिका ने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया और ठंडा जल पिलाया। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। कविता कहने लगी कभी-कभी छोटी-छोटी घटनाएं भी बड़ा परिवर्तन ले आती हैं। गर्मी की छुट्टियों में एक बड़े पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाला बालक यहां आता था। हमारे बच्चों को तरह-तरह के खेल सिखाता था। एक दिन उसकी माताजी भी उसके साथ यहां आई। यह देखने के लिए कि उनका पुत्र कहां जाता है क्या करता है? उस समय केन्द्र पर सिलाई की कक्षा चल रही थी महिलाओं को सिलाई सिखते हुये देखा। उनके मन में विचार आया कि मैं इन महिलाओं को कुछ कपड़ा और धागे देकर इनकी सहायता करूं। इस बात की चर्चा उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता निधि आहुजा जी, दिल्ली प्रान्त उपाध्यक्ष से की और उनकी सलाह मांगी। सहेली ने कहा यदि आप इनके लिये कुछ करना चाहती हो तो कुछ ऐसा करो कि इनके जीवन में सुखद बदलाव आ सके। इस बात पर वह मनन चिन्तन करने लगी। इस घटना की चर्चा उन्होंने एक दिन अपने भाई से की। दीदी यहां मैं बता दूं कि उनके भाई तुषार जी सिले सिलाये वस्त्रों के निर्यातक हैं। एक दिन दोनों भाई बहन सेवा बस्ती से गुजर कर सेवा केन्द्र पर गये वहां महिलाओं को सिलाई सिखते देख उनके मन में विचार आया ये तो केवल घरेलू उपयोग के वस्त्र ही सिल सकती हैं । अगर इन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण दे कर फैक्टरी में लगाया जाए तो ये अपने लिये व्यवस्थित जीविका कमा पाएंगी। इस विचार को उन्होंने सेवा भारती के कार्यकर्ताओं से साझा किया और सलाह मांगी। तय हुआ कि इच्छुक महिलाओं को व्यावसायिक मशीनों पर सिलाई की ट्रेंनिंग देकर फिर इन्हें फैक्टरी में नौकरी पर लगाया जाए।

उदार हृदय तुषार जी ने दो व्यावसायिक सिलाई मशीनें सेवा भारती केन्द्र पर भिजवा दीं। अब समस्या थी इन्हें सिखाये कौन। वहां की सिलाई

मेरा नाम गीता है मेरे पति रिक्शा चलाते हैं उससे कुछ खास आमदनी नहीं हो पाती है। तीन बच्चों का पालन-पोषण बहुत मुश्किल से हो पा रहा था। तभी मुझे पता चला सेवा भारती के केन्द्र पर नौकरी दिलाने का कोई कार्यक्रम हो रहा है। मैंने बड़े ध्यान से काम सीखा और सच में एक महिने बाद फैक्टरी में मुझे काम मिल गया अब मैं अच्छे पैसे कमा रही हूं।

शिक्षिका को इन मशीनों के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं। फैक्टरी से दो कारीगर सिखाने के लिये भेजे गये। 10 दिन में थोड़ा-बहुत सीख कर महिलायें फैक्टरी से काम के लिये गई।

यहां कविता कुछ क्षणों के लिये रुक गई। मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी हां बताओ फिर आगे क्या हुआ, उन्हें नौकरी मिली क्या? इस पर वह गहरी सांस लेकर बोली मात्र 10 दिन की ट्रेनिंग महिलायें कुछ भी ठीक से नहीं सीख पाई थीं, सफल नहीं हो पाई। एक तरह से अव्यवस्था का वातावरण बन गया यह प्रयास पूरी तरह से असफल रहा। किन्तु कार्यकर्ताओं ने हार नहीं मानी। नये सिरे से इस प्रकल्प पर पुनः विचार विमर्श हुआ विस्तार से योजना बना कर इस प्रकल्प को शुरू किया गया।

पहली बार की असफलता से लोगों के मन में थोड़ी झिझक थी। कुछ महिलायें साहस करके सीखने के लिए आगे आई उनमें से मैं भी एक हूं। इस बार एक महिने की ट्रेनिंग अवधि तय की गई। हर सप्ताह के अन्त में टेस्ट लिया जाता था। जो महिलाएं टेस्ट में सफल होंती उन्हें अगले सप्ताह का कोर्स सिखाया जाता था जो महिलाएं सफल नहीं हो पातीं, उनको पिछले सप्ताह का कोर्स ही दोहराने के लिये दिया जाता है। इस बार दो की जगह चार मशीनों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा था। इस तरह एक बैच में आठ महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं। फैक्टरी से एक बहुत ही कुशल व अनुभवी व्यक्ति को प्रशिक्षण देने के लिये भेजा गया था। चार महिलाएं मशीन पर काम सिखतीं और चार हाथ का काम इस प्रकार बारी-बारी आठों महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं।

मेरा नाम विवेक कुमार है मैं 12वीं पास हूं। पिता जी सिलाई का काम करते थे परन्तु कोरोना से अचानक उनकी मृत्यु हो गई। माता जी बीमार रहती हैं, कहीं कुछ काम नहीं मिल पा रहा था, तभी मेरे एक दोस्त ने सेवा भारती के बारे में बताया। एक दिन साहस कर के मैं केन्द्र पर गया और अपनी इच्छा जताई। प्रशिक्षण देने वाले सर ने मेरी पूरी बात सुन कर मुझे प्रशिक्षण और नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया। प्रशिक्षण लेकर मैं नौकरी पर लग गया हूं। अच्छे पैसे मिल रहे हैं।

प्रशिक्षण लेने के लिये 18 से 45 वर्ष की उम्र निश्चित की गई। महिलाओं के अलावा पुरुष भी इस प्रशिक्षण के लिये आगे आ रहे हैं।

अब तक 75-76 महिलाएं तथा 4-5 पुरुष नौकरी प्राप्त कर सफलतापूर्वक अपनी जीविका कमा रहे हैं। चलिये मैं आपको कुछ लोगों से मिलवाती हूं जो प्रशिक्षण लेकर सफलता पूर्वक नौकरी कर रही हैं। इसके लिये आपको सेवा बस्ती में चलना होगा। मैं तुरन्त तैयार हो गई। पतली-पतली गलियों से होते हुये हम एक छोटे से कमरे के पास पहुंचे। द्वार खटखटाने पर एक 38-40 वर्ष की महिला बाहर आई और अन्दर आने का आग्रह करने लगी। उस छोटे से कमरे में एक तरफ रसोई बनाई गई थी और दूसरी ओर एक तख्त पड़ा था। हम उसी पर बैठ कर बातें करने लगे। मेरा नाम गीता है मेरे पति रिक्शा चलाते हैं उससे कुछ खास आमदनी नहीं हो पाती है। तीन बच्चों का पालन-पोषण बहुत मुश्किल से हो पा रहा था। तभी मुझे पता चला सेवा भारती के केन्द्र में नौकरी दिलाने का कोई कार्यक्रम हो रहा है। मैं वहां गई। पता चला एक महीने तक काम सिखना होगा तब नौकरी लगेगी। सोचा कोई बात नहीं एक महिना ही तो है। मैंने बड़े ध्यान से काम सीखा और सच में एक महिने बाद फैक्टरी में मुझे काम मिल गया अब मैं अच्छे पैसे कमा रही हूं। आत्मनिर्भर हो कर मुझे बहुत खुशी होती है। आस-पड़ोस के लोग अब मुझे आदर की दृष्टि से देखत हैं। मैं सेवा भारती की आभारी हूं उन्हें धन्यवाद करती हूं।

थोड़ी दूर चल कर हम एक और महिला के घर पहुंचे। उन्होंने अपना नाम महेश्वरी बताया। कुछ कहने से पहले ही उनकी आंखों में आंसू आ गये। बोली दीदी मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है। बच्चों को लेकर अपनी माँ के घर रहती हूं। बच्चों के लालन-पालन के लिये छोटे-मोटे काम करती थी। एक दिन मेरे भाई ने मुझे सेवा भारती में प्रशिक्षण की बात बताई। मैं केन्द्र पर गई और बड़े मनोयोग से प्रशिक्षण पूरा कर नौकरी प्राप्त कर ली है। पहले

घर-परिवार में रोज-रोज कलेश होते रहते थे। अब आस-पास के लोग अब मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। मैं बहुत खुश हूं। वहां से निकलने के बाद कविता बोली दीदी मेरी भी तो बात सुन लो। मैंने कहा हां हां बताओ। वह बोली मेरे जीवन में सब कुछ अच्छा तो नहीं कहूंगी, ठीक चल रहा था, तभी एक दिन मेरे पति दुर्घटनाग्रस्त हो गये और सब कुछ जैसे ठप्प हो गया। लोगों के घरों में चौका-बर्तन करके गृहस्थी की गाड़ी कठिनता से चला पा रही थी। एक दिन मेरी बेटी जो कि सेवा भारती के केन्द्र पर किशोरी विकास की कक्षा में जाती थी बताया वहां कोई नौकरी देने का प्रशिक्षण कार्य चल रहा है। मैंने केन्द्र पहुंच कर सारी जानकारी ली। प्रशिक्षण प्राप्त किया और नौकरी पर लग गई। अच्छे पैसे कमा रही हूं। घर खर्च के बाद थोड़े पैसे बचा कर यह स्कूटी मैंने अपने पैसों से खरीदी है, ताकि काम पर आने-जाने की सुविधा हो और समय भी बच सके। इतना कह कर उसकी आंखों में जो आत्मविश्वास की चमक थी वह देख कर ही अनुभव की जा सकती है।

कविता से विदा लेकर फिर एक बार केन्द्र की ओर अपने कदम बढ़ाये। वहां पहुंचकर मैंने प्रत्यक्ष महिलाओं को प्रशिक्षण लेते हुये देखा। उनको प्रशिक्षण देने वाले गजराज सिंह जी से मुलाकात हुई। उन्होंने बताया प्रशिक्षण देने में थोड़ी कठिनाई तो होती ही है। परन्तु ज्यादा कठिनाई तब होती है जब महिलायें पढ़ी लिखी नहीं होती हैं उन्हें नौकरी की भी सख्त जरूरत होती है। ऐसी महिलाओं को केन्द्र पर ही थोड़ा अक्षर ज्ञान और गिनती सिखा कर बाद में प्रशिक्षित करते हैं। वही एक लड़के

महेश्वरी कहने लगी, ‘‘मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है। बच्चों को लेकर अपनी माँ के घर रहती हूं। बच्चों के लालन-पालन के लिये छोटे-मोटे काम करती थी। एक दिन मेरे भाई ने मुझे सेवा भारती में प्रशिक्षण की बात बताई। मैं केन्द्र पर गई और बड़े मनोयोग से प्रशिक्षण पूरा कर नौकरी प्राप्त कर ली है। अब आस-पास के लोग अब मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। मैं बहुत खुश हूं।’’

से भी मिलने का अवसर मिला जो प्रशिक्षण लेकर नौकरी पर लगा था। गजराज सिंह जी और सेवा भारती को धन्यवाद कहने के लिये आया था। उसने बताया मेरा नाम विवेक कुमार है मैं 12वीं पास हूं। पिता जी सिलाई का काम करते थे परन्तु कोरोना बीमारी होने से अचानक उनकी मृत्यु हो गई। मैं परिवार में सबसे बड़ा हूं पूरे परिवार का भार अब मुझ पर ही है। माता जी बीमार रहती हैं, कहीं कुछ काम नहीं मिल पा रहा था, तभी मेरे एक दोस्त ने बताया सेवा भारती के केन्द्र और प्रशिक्षण की बात तथा वो नौकरी भी दिलवा देते हैं। मैं झिझक रहा था क्योंकि वहां तो सिर्फ महिलायें ही सिखने जाती हैं। फिर भी एक दिन साहस कर के मैं केन्द्र पर गया और अपनी इच्छा जताई। प्रशिक्षण देने वाले सर ने मेरी पूरी बात सुन कर मुझे प्रशिक्षण और नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया। मुझे देख कर एक और लड़का वहां आया। प्रशिक्षण लेकर मैं नौकरी पर लग गया हूं। अच्छे पैसे मिल रहे हैं। मेरा परिवार और मैं सेवा भारती का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं।

गजराज सिंह जी ने कहा ईश्वर की कृपा से मुझे यह सेवा का अवसर मिला है। यह काम करके मुझे आत्मिक खुशी मिलती है लोगों की दुआएं और आशीर्वाद मिलता है।

अब मुझे इस प्रकल्प के असली सूत्रधार ‘सारा एक्सपोर्ट’ के मालिक तुषार जी से मिलने की इच्छा हुई। समय ले कर मैं उनके कार्यालय पहुंची। प्रारंभिक परिचय के बाद उन्होंने कहा, ‘‘मैं सेवा भारती और ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मुझे यह सेवा करने का अवसर मिला है। मैं समाज के लिये कुछ कर पा रहा हूं, यह मेरा परम सौभाग्य है जो मैं कुछ लोगों को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग कर रहा हूं।’’

भारतीय संस्कृति में किसी भी रूप में सेवा को सर्वोत्तम माना गया है। मैंने अपने सामने बड़े ही विनम्र और सरल व्यक्ति को पाया। इतनी बड़ी फैक्टरी का मालिक होने का अभिमान कहीं भी नहीं झलक रहा था। धन्यवाद कहते हुये मैंने उनसे विदा ली। मन में यह सोचते हुये कि ऐसे अनेक प्रशिक्षण केन्द्रों की आवश्यकता है जो कि समाज के हर स्तर के लोगों को रोजगार उपलब्ध करा सके। अभावग्रस्त समाज के लिये ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र वरदान से कम नही हैं। ❐

महिला स्वावलंबन की मंगल यात्रा - उद्योग वर्धिनी

■ इन्दिरा मोहन

समाज बदलाव के दौर में है। पुराना छूट रहा है तो नया समय के अनुसार जुड़ रहा है। बदलाव की इस प्रक्रिया में महिलाएं मेहनत और इच्छा-शक्ति के द्वारा विकास की दिशायें खोल रही हैं। समानता और सहभागिता के बल पर नए जीवन मूल्य अंकुरित कर रही हैं। अपनी दीन-हीन मानसिकता को त्याग, विषम परिस्थितियों से बाहर निकल, अपने कौशल और हस्तकला को पहचान कर आर्थिक आजादी का खुला आसमान देख रही हैं।

सबसे अच्छी बात यह है कि उनकी आर्थिक गतिविधियाँ परिवार के दायरे में बस्तियों के सामूहिक जीवन क्रम से जुड़ी हुई हैं। यद्यपि पुरुष घर के आर्थिक पहलू को देखता है, फिर भी रोजमर्रा की जरूरतों की भरपाई स्त्री अपने भरोसे कर लेती है। दूसरों पर आश्रित रहने की आदत छोड़ दी है। वह न तो सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटती है और न ही रोजगार केन्द्रों की लम्बी लाइनों में लगती है। नौकरियों की कार्यशैली के चलते बच्चों से लेकर बुजुर्गों की देखभाल करना सरल नहीं होता। वह आत्मनिर्भरता की शान्ति में जीना चाहती है।

महिलाओं की इस सकारात्मक उद्यम चेतना का जीवन्त उदाहरण है शोलापुर स्थित 'उद्योग वर्धिनी' प्रकल्प, जिसने आर्थिक सशक्तिकरण के द्वारा महिला स्वावलम्बन की मंगल यात्रा आरम्भ की है। सामान्य वर्ग से जुड़ी विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत परिस्थितियों से जूझते हुए श्रीमती चन्द्रिका चौहान ने नानाजी देशमुख की संकल्पना के अनुसार उनसे प्रेरणा लेकर आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में सोचना शुरू किया। वे भली प्रकार जानती थीं कि साधनों का संकट केवल मेरी निजी समस्या नहीं वरन् बस्तियों की सारी महिलाओं की समस्या है तब क्यों न सामूहिक रूप से मिल-जुल कर आसपास ही कुछ काम शुरू किया जाए-सिलाई-कढ़ाई, तरह-तरह के भोजन बनाने में तो हम सभी होशियार हैं, कुशल हैं किन्तु धन कहाँ से आएगा? बेचने से पहले कच्चा माल तो खरीदना ही होगा।

> 'उद्योग वर्धिनी' संस्था केवल उद्योग अथवा व्यापार तक ही सीमित नहीं है, वरन् बस्तियों के बच्चों, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा, अकेली वृद्ध महिला की देखभाल, विधवाओं को आर्थिक सहयोग तथा कानूनी परामर्श की भी चिन्ता करती है । अलग-अलग समूहों द्वारा यह कार्य पूरी सावधानी एवं कुशलता से किया जा रहा है। सच्चे अर्थों में 'उद्योग वर्धिनी' महिलाओं की संस्था है जो महिलाओं के लिए, महिलाओं द्वारा महिला सशक्तिकरण का रचनात्मक कार्य कर रही है।

इच्छा-शक्ति यदि प्रबल हो तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। सबने एकमत से निश्चय किया कि अपनी रोजमर्रा की कमाई में से ही कुछ धन बचा कर एक दूसरे को आर्थिक सहयोग देने के लिए स्वयंसेवी समूह बना लें। इसके बाद उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। छोटी-छोटी धनराशि एकत्र कर सामूहिक रूप से बैंक अकाउंट खोल, उससे आर्थिक लाभ लेने लगीं। इस बचत योजना का सदुपयोग होने लगा। कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ। चन्द्रिका चौहान जैसी समर्पित समाजसेवी महिलाओं की दूरदृष्टि ने स्वयंसेवी समूह की अनन्त संभावनाओं को पहचान कर सन 2004 में उद्योग वर्धिनी को विधिवत संस्था का स्वरूप दिया। महिलाओं

में अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत को विकसित करना, उन्हें सशक्त करना ही संस्था का मुख्य उद्देश्य है। सशक्त होकर ही वह अपने परिवार, बच्चों, बुजुर्गों और आश्रयहीन कमजोर लोगों की साज संवार कर सकती हैं।

विश्वास, बदलाव और विकास की आशा में एक बड़े परिवार की तरह महिलायें जुड़ने लगीं। आत्मीयता की डोर में बंधी वे साथ आती गईं, कारवाँ बनता गया। आज 17 हजार से अधिक महिलाएं लाभ उठा चुकी हैं। अपनी लगन, समर्पण और गुणवत्ता के कारण बिना विज्ञापन के संस्था के उत्पादों ने अपनी विशेष पहचान बनाती है। वे कहती हैं कि कस्टमर का संतोष ही हमारा विज्ञापन है। संस्था विभिन्न घरेलू धंधों की ट्रेनिंग देने से लेकर मार्केटिंग तक की योजना तैयार करती है। हस्तकला आधारित कुटीर उद्योग एवं रसोई संबंधी कच्चा माल थोक में खरीदने, बने माल का बाजार खोजने का कार्य सामूहिक कौशल से किया जाता है। कार्य की लगन और प्रयोजन की ईमानदारी देख अनुभवी लोगों का सहयोग व परामर्श सहज मिल रहा है। केन्द्र के लिये जो आवश्यक संसाधन चाहिए सेवाभावी लोग उन्हें जुटा देते हैं।

रुचि के अनुसार उद्योग की ट्रेनिंग लेने के बाद महिलाएं 25-25 का समूह बना कर लगन से काम कर रही हैं। पापड़, बड़ी, आचार से लेकर खाकड़ा, ज्वार की रोटी, मूंगफली की चिक्की आदि दुकानों में खूब बिकती हैं। उद्योग वर्धिनी के पास स्वयं के रसोई घर सुविधा होने के कारण वे मन्दिर के उत्सव सामाजिक पारिवारिक तीज-त्योहारों एवं पार्टियों के लिए

इच्छा-शक्ति यदि प्रबल हो तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। सबने एकमत से निश्चय किया कि अपनी रोजमर्रा की कमाई में से ही कुछ धन बचा कर एक दूसरे को आर्थिक सहयोग देने के लिए स्वयंसेवी समूह बना लें। इसके बाद उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। छोटी-छोटी धनराशि एकत्र कर सामूहिक रूप से बैंक अकाउंट खोल, उससे आर्थिक लाभ लेने लगीं। इस बचत योजना का सदुपयोग होने लगा।

भोजन बनाने लगी हैं। जो समूह भोजन बनाता है वही भोजन बांटने की जिम्मेदारी निभाता है। 'केटरिंग' की यह सुविधा लोकप्रिय हो गई है, आर्डर भी खूब मिलने लगे हैं।

सिलाई और हस्तकला के अन्तर्गत पुस्तक बाइडिंग, बैग, तरह-तरह की ड्रेस, गुदड़ी एवं रजाइयाँ बन रही हैं। ये रजाइयां विदेशों में जा रही हैं। 2 से 8 साल की बच्चियों के लिए साड़ी सिलना इनकी विशेषता बन गया है। सुन्दर-सुन्दर भगवान के वस्त्र भी सिले जा रहे हैं।

मेहंदी के साथ-साथ महिला-पुरुष के सौन्दर्य प्रसाधन केन्द्रों की धूम मचाई हुई है। 300/- से शुरू हुआ यह काम 6 करोड़ का व्यापार कर रहा है। स्वयं सहायता समूह की भागीदारी ने महिला स्वरोजगार को बढ़ावा देकर समाज में बदलाव की अलख जगा दी है, सोचने का नजरिया बदल गया है। अपना हाथ ही जगन्नाथ, इस सत्य को पहचान कर वे एक-दूसरे की सहयोगी बन, अपनी सन्तान को शिक्षित और परिवार को सक्षम बना रही है। वर्तमान में 7 हजार से भी अधिक महिलाएं संस्था से जुड़कर समाज को सद्भाव, सहयोग और समानता के सूत्र में बाँध रही हैं। विकास को गति दे रही हैं।

प्रस्तुत संस्था केवल उद्योग अथवा व्यापार तक ही समिति नहीं, वरन् बस्तियों के बच्चों, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा, अकेली वृद्ध महिला की देखभाल, विधवाओं को आर्थिक सहयोग तथा कानूनी परामर्श की भी चिन्ता करती हैं । अलग-अलग समूहों द्वारा यह कार्य पूरी सावधानी एवं कुशलता से किया जा रहा है। सच्चे अर्थों में 'उद्योग वर्धिनी' महिलाओं की संस्था है जो महिलाओं के लिए, महिलाओं द्वारा महिला सशक्तिकरण का रचनात्मक कार्य कर रही है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से 'नारी स्वावलम्बन', 'नारी स्वाभिमान' को जागृत कर समरस, स्वस्थ, संस्कारी समाज का निर्माण राष्ट्रीय सेवा भारती का संकल्प है। यह संकल्प ही आदर्श और यथार्थ का समन्वय जीवन को पूर्णता की ओर ले जा रहा है। निम्न पते पर संस्था से संपर्क किया जा सकता है-उद्योग वर्धिनी, 157, दक्षिण कस्बा, श्री शुभाराय महाराज मठ, दत्ता चौक, सोलापुर -7 (महाराष्ट्र)। ❑

सेवा सम्मान 2023

नाम : स्व. श्री शादीलाल मिंडा
सम्मान : सेवा भूषण

स्व. श्री केदारनाथ अग्रवाल (काकाजी)
सम्मान : सेवा भूषण

लाला श्री मांगेराम अग्रवाल
सम्मान : सेवा भूषण

श्री अजय सिंघल
सम्मान : सेवा भूषण

द हंस फाउंडेशन
सम्मान : सेवा भूषण

श्री हनुमान बालाजी मंदिर सेवा समिति,
विवेक विहार, दिल्ली। सम्मान : सेवा भूषण

दिल्ली पुलिस
सम्मान : सेवा भूषण

श्री आशीष महापात्रा
सम्मान : सेवा भूषण

श्री अमित गर्ग एवं श्रीमती रेखा गर्ग
सम्मान : सेवा भूषण

श्री वैभव लाल
सम्मान : सेवा भूषण

श्री कपिल गर्ग
सम्मान : सेवा भूषण

सिद्धि फाउंडेशन
सम्मान : सेवा भूषण

सेवा सम्मान 2023

श्रीमती उपासना अरोड़ा
सम्मान : सेवा भूषण

श्री गोपाल मित्तल
सम्मान : सेवा भूषण

श्रीमती प्रोमिला मित्तल
सम्मान : सेवा भूषण

श्री सुरेश गुप्ता
सम्मान : सेवा भूषण

श्री रंजन कश्यप
सम्मान : सेवा भूषण

EFKON India Pvt. Ltd
सम्मान : सेवा भूषण

श्री टी.आर. गर्ग
सम्मान : सेवा भूषण

श्री अनिल खैतान
सम्मान : सेवा भूषण

श्री पवन कंसल
सम्मान : सेवा भूषण

श्री राम कैलाश गुप्ता
सम्मान : सेवा भूषण

श्री शम्मी भंडारी
सम्मान : सेवा भूषण

सर गंगा राम अस्पताल
सम्मान : सेवा भूषण

बिरसा मुंडा : धर्म, धरती और समाज के रक्षक

■ मानवेंद्र

आदिवासियों के महानायक बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को सुगना और करमी के घर हुआ था। बिरसा मुंडा ने साहस की स्याही से पुरुषार्थ के पृष्ठों पर शौर्य की शब्दावली रची। उन्होंने हिन्दू धर्म और ईसाई धर्म का बारीकी से अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आदिवासी समाज मिशनरियों से तो भ्रमित है ही हिन्दू धर्म को भी ठीक से न तो समझ पा रहा है, न ग्रहण कर पा रहा है। बिरसा मुंडा ने अनुभव किया कि आचरण के धरातल पर आदिवासी समाज अंधविश्वासों की आंधियों में तिनके-सा उड़ रहा है तथा आस्था के मामले में भटका हुआ है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि सामाजिक कुरीतियों के कोहरे ने आदिवासी समाज को ज्ञान के प्रकाश से वंचित कर दिया है। धर्म के बिंदु पर आदिवासी कभी मिशनरियों के प्रलोभन में आ जाते हैं, तो कभी ढकोसलों को ही ईश्वर मान लेते हैं। भारतीय जमींदारों और जागीरदारों तथा ब्रिटिश शासकों के शोषण की भट्टी में आदिवासी समाज झुलस रहा था। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को शोषण की नाटकीय यातना से मुक्ति दिलाने के लिए उन्हें तीन स्तरों पर संगठित करना आवश्यक समझा।

1. पहला तो सामाजिक स्तर पर ताकि आदिवासी-समाज अंधविश्वासों और ढकोसलों के चंगुल से छूट कर पाखंड के पिंजरे से बाहर आ सके। इसके लिए उन्होंने आदिवासियों को

स्वच्छता का संस्कार सिखाया। शिक्षा का महत्व समझाया। सहयोग और सरकार का रास्ता दिखाया।

बिरसा पढ़ाई में बहुत होशियार थे इसलिए लोगों ने उनके पिता से उनका दाखिला जर्मन स्कूल में कराने को कहा। पर ईसाई स्कूल में प्रवेश लेने के लिए ईसाई धर्म अपनाना जरुरी हुआ करता था तो बिरसा का नाम परिवर्तन कर बिरसा डेविड रख दिया गया।

कुछ समय तक पढ़ाई करने के बाद उन्होंने जर्मन मिशन स्कूल छोड़ दिया, क्योंकि बिरसा के मन में बचपन से ही साहूकारों के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह की भावना पनप रही थी।

इस अवधि में जर्मन-लूथेरन और रोमन कैथोलिक ईसाइयों के भूमि आन्दोलन चल रहे थे। एक दिन चाईबासा मिशन में उपदेश देते हुए डॉ. नोट्रेट ने ईश्वर के राज्य के सिद्धांत पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस उपदेश के श्रोता के रूप में बिरसा भी उपस्थित थे। डॉ. नोट्रेट का कहना था कि यदि वे ईसाई बने रहेंगे और और उनके अनुदेशों का अनुपालन करते रहेंगे तो उनकी छिनी हुई जमीन की वापसी कर दी जाएगी। इस बात से बिरसा को और अन्य लोगों को भी बड़ा धक्का लगा और 1886-87 में मिशनरियों से सरदारों का संबंध विच्छेद हो गया। उसके बाद मिशनरियों ने सरदारों को धोखेबाज कहना शुरू किया। बिरसा ने उसी समय डॉ. नोट्रेट और मिशनरियों को बहुत ही तीखे शब्दों में आलोचना की। इसका नतीजा यह हुआ कि बिरसा को स्कूल से निकाल दिया गया। इस घटना के बाद उन्होंने अपनी आवाज बुलंद की साहब साहब एक टोपी है। अर्थात गोरे अंग्रेज और मिशनरी एक जैसे हैं।

वर्ष 1891 में उनकी भेंट आनन्द पांड से होती है। आनंद पांड बंदगाँव के गैर मुंडा आदिवासी जमींदार जगमोहन सिंह का मुंशी था। आनंद पांड स्वांसी जाति का एक धार्मिक व्यक्ति था। उससे मिलकर बिरसा ने वैष्णव धर्म के प्रारम्भिक सिद्धांतों और रामायण महाभारत की कथाओं का श्रवण कर ज्ञान हासिल किया। आनन्द पांड बिरसा के गुरु तुल्य थे, जिनके साथ वे तीन

वर्ष तक रहे। उनके साथ रहकर उन्होंने गौड़बेड़ा, बमनी और पाटपुर आदि गांवों का भ्रमण किया था। इस कर्म में बमनी में एक वैष्णव साधु से उनकी मुलाकात हुई। साधं उनहें तीन महीने तक उपदेश देते रहे। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर बिरसा ने मांस खाना छोड़ दिया और जनेऊ धारण कर शुद्धता और ध र्म परायणता का जीवन व्यतीत करने में विशेष जोर देने लगे। वे तुलसी की पूजा करने लगे और माथे पर चन्दन का टीका लगाना शुरू किया। उन्होंने गो-वध को भी रुकवाया। आनंद पांड के समीप बिरसा की शिष्यत्व की अवधि 1893-94 में समाप्त हो गयी।

बिरसा का यह समय व्यक्तित्व निर्माण का था।

इसके बाद बिरसा ने बलात् धर्म परिवर्तन के विरुद्ध लोगों को जागृत किया तथा आदिवासियों की परम्पराओं को जीवित रखने के कई प्रयास किए। सामाजिक स्तर पर आदिवासियों के इस जागरण से जमींदार-जागीरदार और तत्कालीन ब्रिटिश शासन तो बौखलाया ही, पाखंडी झाड़-फूंक करने वालों की दुकानदारी भी ठप हो गई। यह सब बिरसा मुंडा के विरुद्ध हो गए। उन्होंने बिरसा को षड्यंत्र रचकर फंसाने के प्रपंच आरम्भ किये। यह तो था सामाजिक स्तर पर बिरसा का प्रभाव। काले कानूनों को चुनौती देकर बर्बर ब्रिटिश साम्राज्य को सांसत में डाल दिया।

2. दूसरा था आर्थिक स्तर पर सुध ार ताकि आदिवासी समाज को जमींदारों और जागीरदारों के आर्थिक शोषण से मुक्त किया जा सके। बिरसा मुंडा ने जब सामाजिक स्तर पर आदिवासी समाज में चेतना पैदा कर दी तो आर्थिक स्तर पर सारे आदिवासी शोषण के विरुद्ध स्वयं ही संगठित होने लगे। बिरसा मुंडा ने उनके नेतृत्व की कमान संभाली। आदिवासियों ने 'बेगारी प्रथा' के विरुद्ध प्रबल आंदोलन किया। परिणामस्वरूप जमींदारों और जागीरदारों के घरों तथा खेतों और वन की भूमि पर कार्य रूक गया।

अंग्रेजों ने 'इंडियन फारेस्ट एक्ट 1882' पारित कर आदिवासियों को

बिरसा मुंडा सही मायने में पराक्रम और सामाजिक जागरण के धरातल पर तत्कालीन युग के एकलव्य और स्वामी विवेकानंद थे। बिरसा मुंडा की गणना महान देशभक्तों में की जाती है। ब्रिटिश सरकार ने इस संकट का संकेत समझकर बिरसा मुंडा को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया।

जंगल के अधिकार से वंचित कर दिया। अंग्रेजों ने जमींदारी व्यवस्था लागू कर आदिवासियों के वो गाँव, जहां वे सामूहिक खेती करते थे, जमींदारों और दलालों में बांटकर राजस्व की नयी व्यवस्था लागू कर दी। और फिर शुरू हुआ अंग्रेजों, जमींदार व महाजनों द्वारा भोले-भाले आदिवासियों का शोषण।

इस शोषण के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी फूंकी बिरसा ने। अपने लोगों को दासता से स्वतंत्रता दिलाने के लिए बिरसा ने 'उलगुलान' (जल-जंगल-जमीन पर दावेदारी) की अलख जगाई।

3. तीसरा था राजनीतिक स्तर पर आदिवासियों को संगठित करना। चूंकि उन्होंने सामाजिक और आर्थिक स्तर पर आदिवासियों में चेतना की चिंगारी सुलगा दी थी, अतः राजनीतिक स्तर पर इसे आग बनने में देर नहीं लगी। आदिवासी अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजग हुए।

1895 में बिरसा ने अंग्रेजों की लागू की गयी जमींदारी प्रथा और राजस्व व्यवस्था के विरुद्ध लड़ाई के साथ-साथ जंगल-जमीन की लड़ाई छेड़ी। यह केवल कोई विद्रोह नहीं था, अपितु यह तो आदिवासी स्वाभिमान, स्वतन्त्रता और संस्कृति को बचाने का संग्राम था।

बिरसा ने 'अबुआ दिशुम अबुआ राज' यानि 'हमारा देश, हमारा राज' का नारा दिया। देखते-ही-देखते सभी आदिवासी, जंगल पर अधिकार के लिए इकट्ठे हो गये। अंग्रेजी सरकार के पांव उखड़ने लगे। और भ्रष्ट जमींदार व पूंजीवादी बिरसा के नाम से भी कांपते थे।

अंग्रेजी सरकार ने बिरसा के उलगुलान को दबाने की हर संभव कोशिश की, लेकिन आदिवासियों के गुरिल्ला युद्ध के आगे उन्हें असफलता ही मिली। 1897 से 1900 के बीच आदिवासियों और अंग्रेजों के बीच कई लड़ाइयां हुई। पर हर बार अंग्रेजी सरकार ने मुंह की खाई।

जिस बिरसा को अंग्रेजों की तोप और बंदूकों का बल नहीं पकड़ पाया, उसके बंदी बनने का कारण अपने ही लोगों का धोखा बना। जब अंग्रेजी सरकार ने बिरसा को पकड़वाने के लिए

500 रुपये की धनराशि के इनाम की घोषणा की तो किसी अपने ही व्यक्ति ने बिरसा के गुप्त स्थान का पता अंग्रेजों तक पहुंचाया।

जनवरी 1900 में उलिहातू के नजदीक डोमबाड़ी पहाड़ी पर बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे, तभी अंग्रेज सिपाहियों ने चारों तरफ से घेर लिया। अंग्रेजों और आदिवासियों के बीच लड़ाई हुई। महिलाओं और बच्चों समेत बहुत से लोग मारे गये। अन्त में बिरसा भी 3 फरवरी, 1900 को चक्रध रपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा मुंडा सही मायने में पराक्रम और सामाजिक जागरण के धरातल पर तत्कालीन युग के एकलव्य और स्वामी विवेकानंद थे। बिरसा मुंडा की गणना महान देशभक्तों में की जाती है। ब्रिटिश सरकार ने इस संकट का संकेत समझकर बिरसा मुंडा को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया। वहां अंग्रेजों ने उन्हें विष दिया था। जिस कारण वे 9 जून, 1900 को धर्म, धरती और समाज के लिए बलिदान हो गए।

आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। ❐

(लेखक सेवा भारती, यमुना विहार के संगठन मंत्री हैं)

सेवा कब सम्मान बन जाता है

■ आचार्य आशुकवि पंकज

सेवा कब सम्मान बन जाता है, एक बार करके जरूर देखिये? चराचर ब्रह्माण्ड में सभी कार्य इस प्रकार सुनियोजित किया गया है कि हमारे द्वारा जो भी क्रिया होता है वो सेवा का आध ार बनता है। जिस प्रकार धर्म के चार स्तंभ हैं उसी प्रकार सेवा के तीन स्तंभ हैं। तन सेवा, मन सेवा, धन सेवा समाज में सभी को सेवा करना बड़ा ही सहज है। हमारे द्वारा किया गया सभी कृत्य कर्म जिससे एक दूसरे का कार्य के अवरोधक दृश्य को समाप्त कर उनके कार्य को सम्पन्न कराएं। यही जब हमारे श्रम, मेहनत, शारीरिक क्रिया से हो तो तन सेवा। मन को एकाग्रचित करके मनः शक्ति से संकल्प शक्ति से सकारात्मक ऊर्जा का प्रयोग हो मन सेवा है। किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए भौतिक वस्तु का होना अति आवश्यक है क्योंकि आज के आंकलन के अनुसार मुद्रा/धन बिना सेवा का कोई आधार नहीं अतः यह धन सेवा है। इन तीनों में आज धन सेवा पर ही अधिक बल दिया जाता है। जिस प्रकार एक सिक्के दो पहलू होते हैं, ठीक उसी प्रकार सेवा के दो पहले हैं - (1) स्वार्थ भाव (2) निस्वार्थ भाव। स्वार्थ भाव का तात्पर्य है स्वयं

के कार्य को सम्पन्न करने के लिए जिससे हमारा कर्तव्य जन्म लेता है ओर हमारे क्रियाकलाप को सम्पन्न करता है। यह स्वार्थ भाव है जो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

निस्वार्थ भाव का तात्पर्य जो कार्य सेवा हमारे हित में न हो दूसरे के कल्याण में हो, दूसरो के हित में जिसमें हमारा कार्य पूर्ण न हो वो निस्वार्थ भाव है जिसे एक मुहावरा के तौर श्रृंगार किया गया। नेकी कर दरिया में डाल।

वस्तुतः सेवा सम्मान का भूषण है जिससे समाज में आपका परिवार में आपका राष्ट्र में आपकी एक पहचान और आपको पूर्ण मानव बनाने में आपसे यह क्रिया कराता है। सेवा अनवरत चलने वाली ऐसी प्रतिभा को जन्म देती है जो हमारे यश का यशोगान होता है, जो इस प्रकार है- (1) श्री हनुमान जी द्वारा श्री राम की दास्य सेवा (2) विवेकानंद जी का विश्व में संस्कृति का राष्ट्र सेवा । (3) संतों ऋषि-मुनियों आदि विश्व कल्याण हेतु मानव सेवा (4) परिवार को चलाने के लिए नौकरी ये स्वयं की सेवा है। (5) पशु पक्षी वृक्षों द्वारा जो प्रकृति का संतुलन बनाने में योगदान करती है वो प्रकृति सेवा है। (6) गरीबों की शिक्षा, वस्त्र, भोजन, हेतु उनकी सहायता नारायण सेवा व समाज सेवा है। ❐

जैविक खेती: उद्यमशीलता का एक नया प्रयोग

■ डॉ. स्मिता यादव

हौंसला रख आगे बढ़ने का
मुश्किलों से लड़ने का
यही तो एक तरीका है,
ऊँची उड़ान भरने का
लड़खड़ा भी जाएं अगर
कदम तो गम न कर
यही तो वक्त है तेरा
कुछ कर गुजरने का।

इन्हीं पंक्तियों को सार्थक करती यह एक प्रगतिशील किसान पद्मश्री कंवर सिंह चौहान की कहानी है जिन्होंने जैविक खेती के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान दिया है जो अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बन गए हैं। जैविक खेती कृषि की वह विधि है जो संश्लेशित उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है।

हरियाणा के सोनीपत जिले के ग्राम अटेरना में जन्मे किसान कंवल सिंह चौहान आज युवाओं के लिए नई दिशा का संचार कर रहे हैं। किसान कंवल सिंह चौहान को 2019 में जैविक खेती के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविद जी द्वारा पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया। आज कंवल सिंह चौहान हरियाणा के ही नहीं, बल्कि देश भर के किसानों के लिए आषा की किरण लेकर आए हैं। एक नया प्रयोग जो उद्यमशीलता का उदाहरण बन गया है और इसी कारण आस-पास के क्षेत्रों में इन्हें क्रांतिकारी किसान के रूप में जाना जाता है। सरकार के द्वारा इन्हें 'फादर आफ बेबी कार्न' का नाम भी दिया गया है। ऐसा इसलिए कि इस क्षेत्र में स्वीट कार्न, बेबी कार्न, और मशरूम की खेती को शुरू करने को अन्य किसानों को प्रोत्साहित करने का काम किया।

पद्मश्री कंवल सिंह चौहान 15 वर्ष की आयु से खेती कर रहे हैं। एक दौर था जब वो खुद कर्ज में डूबे हुए थे लेकिन आज वह लोगों को रोजगार देने का माध्यम बन गए हैं। युवाओं को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और स्वावलंबन के नए क्षेत्रों की खोज करनी चाहिए। आज कंवल सिंह चौहान जी ने 500 लोगों को रोजगार दिया हुआ है जिनमें से 200 महिलाएं भी हैं। कंवर सिंह जी ने यह भी बताया कि जब मौसम नहीं भी होता तब भी कम से कम 100 लोगों को काम मिलता है। कोविड काल में यह एक सराहनीय और प्रशंसनीय कदम था जिसने लोगों को पलायन करने से रोका और अपने ही घर में अन्दर लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया। महिलाओं से जब बात की गई तो उन्होंने बताया कि किस तरह इस खेती के माध्यम से हमारी जीविका बढ़ गई है और हम एक अच्छा जीवन जी रहे हैं। हमें कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता और गृहस्थी के साथ-साथ आजीविका में भी अपना योगदान दे पाते हैं। ऐसे प्रयास से महिलाओं के आत्म विश्वास में भी वृद्धि होती है।

पदम्श्री कंवल सिंह चौहान ने बातचीत करते हुए बताया कि खेती में कड़ी मेहनत के बावजूद किसानों को उपज के सही दाम नहीं मिलते थे। इन चुनौतियों के देखते हुए उन्होंने कुछ नए कदम उठाए। उन्होंने पैक हाऊस बनाने का लक्ष्य रखा। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने पैक हाउस की स्थापना को एक क्रांतिकारी कदम बताया और कृषि के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए

सराहना भी की। इस कदम से किसानों की आमदनी बढ़ी और उनकी दशा-दिशा दोनों में बदलाव आया।

किसान कंवल सिंह जी ने बताया कि वे देश में होने वाली किसानों की आत्महत्या से बहुत आहत थे। हर समय यही चिंतन सताता था कि किसानों के जीवन को किस तरह बदला जाए जिससे वो आत्महत्या का कदम न उठाएं। कंवल सिंह द्वारा उठाया गया कदम पैक हाउस की दिशा में, आज पूरे देश के सामने आमदनी को बढ़ाने का नायाम उदाहरण पेश कर रहा है। अपनी उपज को एक जगह इकट्ठा करने पर किसान उत्पादक संगठनों को पैक हाऊस की सुविध दी जाती है। इस तरह के पैक हाऊस की स्थापना के लिए सरकार किसान उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) को 60 से 70 प्रतिषत तक अनुदान देती है।

कंवल सिंह चौहान आज स्वीट कार्न, बेबी कार्न, मशरूम और मक्का जैसी कई फसलों की खेती के साथ-साथ उनकी प्रोसेंसिंग भी करते हैं। उनके इस प्रयास से न केवल किसानों को अपनी उपज के सही दाम मिल रहे, बल्कि देश-विदेश में अपनी उपज पहुंचाने का अवसर और रोजगार भी मिल रहा है। कंवल सिंह जी ने 1998 में खेती के क्षेत्र में एक नया प्रयोग किया। और उन्होंने मशरूम और बेबी कार्न की खेती करने का निश्चय किया। उनका यह फैसला इतना सफल रहा कि वे पद्मश्री सम्मान के लिए नामांकित हुए।

कंवल जी ने बताया कि जब गांव में बेबी कार्न, स्वीट कार्न इत्यादि का उत्पादन बढ़ा तो किसानों को बाजार की दिक्कत न हो इसके लिए कंवल सिंह जी ने वर्ष 2009 में फूड प्रोसेंसिंग यूनिट शुरू कर दी। इस यूनिट की मदद से प्रतिदिन लगभग डेढ टन बेबी कार्न और अन्य उत्पाद बाहर के देशों में निर्यात हो रहे हैं। इसी के साथ वे यहाँ टमाटर, स्ट्रोबेरी की प्यूरी भी तैयार कर रहे हैं। उन्होने युवाओं से भी आह्वान किया है कि सरकारी नौकरी की बजाय खेती को व्यापार की तरह करें।

कंवल सिंह जी से बातचीत के दौरान यह पाया कि वे बिल्कुल धरती से जुड़े हैं। वे कहते हैं, ''मै पदम्श्री सम्मान से पहले भी एक किसान था और आज भी एक किसान हूँ। मेहनत मेरा लक्ष्य है, सोच मेरी ऊँची है, प्रयास और प्रयोग मेरी कार्यप्रणाली है।'' यह शब्द बहुत प्रेरणादायी हैं। महिलाएं इस व्यवसाय से बहुत खुश दिखाई दी और उनके मेहनत और जज्बे से इस नई दिशा और नए प्रयोग को कामयाबी मिली। कई प्लाटंस जो कि कई एकड़ भूमि में फैले हुए हैं वहां सभी को मेहनत से काम करते हुए पाया। प्लाटंस मे मटर और सोयाबीन चाप को खेत से पैकिंग तक का सफर हमने देखा। इस सफर में कंवर सिंह जी की सोच और उसमें काम करने वाले पुरुष और महिलाओं का योगदान बहुत ही सराहनीय था। हमने हिंदुस्तान के किसान का एक बेहतर कल देखा।

कंवल सिंह चौहान एक नायक के रूप में उभरे और आज पूरा गांव जैविक खेती का एक उदाहरण बन गया। प्रोसेसिंग यूनिट में काम करने वाली महिलाओं ने बताया कि आज स्वावलंबन के क्षेत्र में हमारी भूमिका ने हमारे जीवन को नई दिशा दी है। बेबी कार्न प्रोसेसिंग में महिलाएं ज्यादा काम कर रही थीं। उन्होंने बताया कि बेबी कार्न खेत से आने के बाद A Category की बेबी कार्न को अपने पास रखते हैं और B Category बेबी कार्न को किसानों को बाजार में बेचने के लिए दे दिया जाता है। केटेगरी की बेबी कार्न को साफ करने के बाद उन्हें उबाला जाता है और फिर उन्हे ठंडा किया जाता है। कूलिंग के बाद एक डिब्बे में 250 ग्राम मात्रा में भरा जाता है कि एक Liquid Solution भी भरा जाता है और फिर डिब्बों की सीलिंग की जाती है। 85-90 डिग्री टेम्पेरेचर पर चेक करके डिब्बे सील किए जाते है फिर एक बड़ी जाली में 285 डिब्बे रखे जाते हैं फिर 50 मिनट तक फिर मशीन में गर्म किया जाता है जिससे इसकी लाइफ 24 महीने तक हो जाती है। फिर ठंडा करके पेटी में बंद कर दिया जाता है।

एक फर्म से निकल कर शोपिंग सेंटर तक का सफर हमारे लिए काफी नया था। एक ठंडे स्टोरेज में इनको रखा जाता है और कई कंपनियों के साथ क्रोन्ट्रेक्ट होता है। और क्वालिटी को बनाए रखते हुए कम खर्च में ज्यादा मुनाफा करने वाला यह व्यवसाय पूरे अटेरना गांव में फैल गया और आस पास के क्षेत्रों से किसान इन प्लांटस का भ्रमण करने और जानकारी लेने आने लगे। आज अटेरना गांव किसी पहचान का मोहताज नहीं है। उसकी अपनी एक पहचान है और इस पहचान को बनाने में कवंल सिंह चौहान जी का एक बड़ा योगदान है।

उन्होंने बताया कि पहले बेबी कार्न और स्वीट कार्न थाइलैंड से आयात होती थी और टमाटर की प्यूरी भी चाइना से आयात होता था। जब हमारे यहाँ यह

खेती हमने शुरू की उससे न केवल आमदनी बढ़ी बल्कि पशुओं का भी चारा मिलने लगा और पशु पालन के क्षेत्र में भी किसानों के जीवन में खुशहाली आई।

अटेरना की मिट्टी ने समाधान दिया जिससे किसानों की स्थिति में सुधार आया और कांन्ट्रेट फारमिंग का नया विचार दिया। छोटे गांव की बड़ी सोच स्वावलंबन का एक नया उदाहरण है। किसानों को अंधेरे से रोशनी की ओर ले जाने में कंवल सिंह चौहान की कहानी बेहद सराहनीय है।

आज सरकार भी कृषि के संदर्भ में कंवर सिंह जी से सलाह लेती है। कृषि विश्वविद्यालय में या अन्य सरकारी संस्थाओं में उनको वक्तव्य के लिए बुलाया जाता है कि खेती में किस तरह के सुधार किए जा सकते हैं और स्वावलंबन के दृष्टिकोण से सलाह ली जाती है।

किसान कवंर सिंह चौहान की कहानी हम सब के लिए एक आदर्श स्थापित करती है। एक आम व्यक्ति से खास व्यक्ति तक का सफर हम सब के लिए प्रेरणादायी है। जो एक आम धारणा थी कि खेती मे कोई आमदनी नहीं, इस धारणा को उन्होंने बदल दिया है। उन्होंने न केवल खेती को मुनाफे का सौदा बनाया है, बल्कि लोगों को रोजगार भी दिया है। कंवल सिंह जी ने मिट्टी में नई सोच का बीज बोया और हम उनके इस जुनून के सामने नतमस्तक हैं। उनके प्रयास ने जैविक खेती के क्षेत्र में जो क्रांति पैदा की, उस क्रांति के नायक को हम शत-शत प्रणाम करते हैं। ❐

एक बैंक, जहां मिलती है रोटी

■ रिषिता अग्रवाल

हम सभी सेवा भारती के कार्यकर्ता अपनी पत्रिका "सेवा समर्पण'' हेतु अपने संगठन से जुड़े कई तरह के सेवा कार्यों का वर्णन पत्रिका में करते हैं, परंतु बहुत सी अलग अलग संस्थाएं भी हैं, जो कि हमारे प्रदेश में तरह तरह के सेवा कार्य कर रहे हैं। उसमें से एक है रोटी बैंक। रोहिणी के सेक्टर 14 के अग्रवाल धर्मशाला पर एक रोटी बैंक, रोटी बैंक रोहिणी के नाम से चलता है। इसकी शुरुआत वर्ष 2020 के कोरोना काल से हुई।

उस समय पूरे दिन में एक हज़ार तक खाने के पैकेट बाँटते थे जरूरतमंदों को। और शाम को पाँच सौ के क़रीब बांटे जाते थे। कोरोना महामारी ख़त्म होने के बाद रोटी बैंक का कार्य बढ़ता गया। शुरुआत में तो यह केवल रोटी दान देने का ही प्रकल्प था। जिसमें दानदाता रोटी का दान करता था और सब्ज़ियाँ यह संस्था बनाकर जरूरतमंदों को बांटती थी। कुछ समय बाद में, रोटी के बँटवाने में कुछ दिक्कतें आई, तो इस संस्थान ने पूरा खाना अपने यहाँ बनवाना शुरू कर दिया।

यह कार्य राजेश गर्ग जी ने शुरू किया और उस संस्था का नाम रखा गया, जन आधार मंच रजिस्टर्ड। परन्तु अब उनके साथ 12 लोगों की टीम है, जिनमें कुछ तो सेवानिवृत्त लोग हैं, कुछ घरेलू महिलाएँ, कुछ युवा, आदि इस टीम को चलाते हैं। जब भी किसी का, जो मन करता है, वो भी आते हैं, बैंक पर सेवा दे सकते हैं।

दानदाता अपनी इच्छानुसार कच्चा अनाज, आटा, सब्ज़ी, कच्ची मैदा, कुछ भी सामान दे सकते हैं। जब भी कोई अपने जन्मदिन, पितरों के श्राद्ध पर वैवाहिक वर्षगांठ आदि पर दान देने हेतु, उसी तारीख के लिए बुकिंग करवाते हैं। 1 दिन पर 1 की ही बुकिंग होती है। खाना बाँटने के लिए कोई भी प्लास्टिक उपयोग में नहीं लिया जाता। स्टील की प्लेट में ही लोग खाना खाते हैं, और वे लोग स्वयं ही प्लेट धो कर रखते हैं।

फिर बाकी के लोग भोजन ग्रहण करते हैं। ऐसे ही चलता रहता है, जब तक आखिरी याचक भोजन न कर ले। आज कल रोज़ ढाई सौ प्लेट दिन मैं और रात में यह सुविधा 150 लोगों को उपलब्ध कराई जाती है।

मानव सेवा का इससे सजीव उदाहरण कम ही देखे जाते हैं। मैं प्रभु से रोटी बैंक की पूरी टीम को बधाई प्रेषित करती हूं। माँ अन्नपूर्णा की कृपा उन पर बनी रहे। ❐

सेवा भारती की यशस्वी यात्रा

दिल्ली के जहांगीरपुरी का वह क्षेत्र जिसे लोग 'स्लम' कहते हैं, उसे विष्णु जी ने 'सेवा बस्ती' का नाम दिया और जन्म हुआ - 'सेवा भारती' का। सेवा बस्ती में रहने वाले लोगों की दीन-हीन दशा देखकर विष्णु जी का मन अक्सर द्रवित हो जाता था। इसलिए विष्णु जी ने बस्ती में रहने वाले बच्चों के लिए बाल संस्कार केन्द्र प्रारंभ किया। इस तरह सेवा भारती की विधिवत स्थापना माननीय बाला साहेब देवरस जी के कर कमलों द्वारा 2 अक्टूबर, 1979 में जहांगीरपुरी के बाल संस्कार केन्द्र से हुई। 'नर सेवा नारायण सेवा' अर्थात् मानव एवं राष्ट्र कल्याण को सर्वोपरि मानकर सेवा भारती ने कार्य करना प्रारंभ किया। सेवा भारती एक स्वयंसेवी व सामाजिक संस्था है, जहां पर बच्चे के जन्म से लेकर व्यक्ति की अंतिम सांस तक जब, जहां, जैसी भी सेवा की आवश्यकता होती है, सेवा भारती व उसके कार्यकर्ता सदैव तत्पर रहते हैं।

'दृष्टिकोण'

समाज का विकास समाज के ही द्वारा हो।

'उद्देश्य'

समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को मुख्यधरा से जोड़ना।

सेवा लेने वाला व्यक्ति सेवा देने वाला सहयोगी बने तथा एक सशक्त समाज का निर्माण हो सके। सेवा भारती का प्रत्येक कार्य समाज के सहयोग से ही चलता है। सहयोगी दानदाता, कार्यकर्ता तथा सेवितजन तीनों कड़ियों का समन्वय ही सेवा भारती का स्तम्भ है। समाज के एक वर्ग को दूसरे वर्ग से जोड़ने का कार्य सेवा भारती के कार्यकर्ता सेतू की तरह करते हैं।

सेवा भारती चार आयामों में काम करती है:- शिक्षा,स्वास्थ, स्वावलंबन और सामाजिक

वर्तमान में दिल्ली में सेवा भारती का कार्य एक वटवृक्ष की तरह है। कोशिश यही है कि सभी सेवा बस्ती कार्ययुक्त हों। कुछ विशेष प्रकल्प हैं जैसे कि सेवाधाम विद्यामन्दिर, डायलिसिस यूनिट, सामूहिक विवाह, मातृछाया, चिकित्सा विभाग। प्रतिवर्ष लाखों लोग लाभान्वित होते हैं। कुछ वर्ष पहले ही संचालित विशेष प्रकल्प जैसे कि 'अपराजिता', टीन्स फॉर सेवा, उत्कर्ष, सक्षम, सोपान एवम् किशोरी विकास केन्द्र अपने आप में एक मिसाल है। सेवा भारती की सोच में कोई छोटा-बड़ा नहीं, भेद-भाव नही यह तो प्रेम का चिंतन है, यह जनता के निमित्त जनता का ही मार्ग है। जिसके कदम-कदम पर आशा है, विश्वास है, सेवा है, समर्पण है। यह यात्रा व्यक्ति को परिवार से, परिवार को बस्ती से, बस्ती को प्रांत से जोड़ कर राष्ट्र को परम वैभव तक पहुँचाने के विधान की संयोजना रच रही है- जहाँ सबका मंगल ही मंगल है।

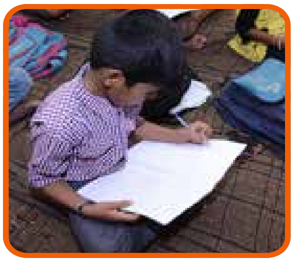

किशोरी विकास केंद्र

किशोरावस्था में बच्चियों के अंदर बहुत से परिवर्तन होते हैं जिसके कारण उनके अंदर भटकाव की स्थिति उत्पन्न होती है। उस स्थिति को ध्यान में रखते हुए खेल, कहानी, चर्चा आदि के माध्यम से, किशोरियों के बौद्धिक, शारीरिक और मानसिक विकास हेतु इस प्रकल्प को चलाया जा रहा है। इसके अलावा समय पर कोई प्रतियोगिता करवाना उन्हें स्वावलंबी बनाने हुत कुछ कौशल विकास का प्रशिक्षण देना आदि। इस वर्ष किशोरियों की भी भजन मण्डली प्रतियोगिता कराई गई। यह इस वर्ष नया प्रयोग किया गया है। ❒

प्रसन्ना सलाह केंद्र

मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य जैसा ही महत्वपूर्ण है। न चाहते हुए भी कई बार ऐसी स्थिति बन जाती है कि व्यक्ति मानसिक दबाव -तनाव में जीने लगता है। किसी कारण विशेष के न होते हुए भी, लड़ाई-झगड़ा, अलगाव, वैमनस्य, कलेश की राह पर दौड़ पड़ता है। अधिकतर लोग ऐसी स्थिति में हाथ नहीं थामते, अकेला छोड़ जाते हैं और पीड़ित व्यक्ति उपेक्षित, निरीह और अकेला हो जाता है। 'प्रसन्ना सलाह केन्द्र' एक दोस्त एक साथी, एक मनोवैज्ञानिक जानकार के रूप में काउसलिंग करके व्यक्ति को सहायता करता है।

प्रसन्ना सलाह केन्द्र इस समय 2 जगह संचालित है:-राम मन्दिर, रघुवीर नगर समय: वीरवार 11-1 बजे एवं मातृछाया मियाँवाली नगर, समय: शुक्रवार- 11-1 बजे। ❒

उत्कर्ष

सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने देह व्यापर में लिप्त। धकेली गई महिलायों की पीड़ा के लिए एक प्रयास किया- उत्कर्ष। एम सी डी, जीण्बी रोड पर एक स्थान का आग्रह किया। यह स्थान एक सरकारी स्कूल का हिस्सा है। यह प्रकल्प उन माताओं, बहनों और उपेक्षित बेटियों के लिए सेवा कार्य करता है दिल्ली के नामी अस्पताल जैसे गंगाराम, मैक्स ,महाराजा अग्रसेन के कुशल चिकित्सको की टीम यहाँ चिकित्सा उपचार करके महिलाओ को एनीमिया,मासिक धर्म स्वच्छता और अन्य स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर जागरूक करते है। महिलाओ के कौशल - विकास और उनके बच्चों के लिए ट्यूशन, छात्रवृति के माध्यम से सर्वागीण विकास करने का हमारा प्रयास है। योग दिवस, वाल्मीकि जयंती, दिवाली, होली, मकर सक्रांति आदि त्योहारों पर यहाँ की महिलाओ की भागीदारी अविश्वसनीय है। ❒

बालिका एवं किशोर छात्रावास

सेवा भारती माता जीवनी बाई कन्या छात्रावास का शुभारंभ 3-6-2024 को किया गया। 17 छात्राएँ इस छात्रावास में रहती है और समान्य रूप से विद्यालय जाती है। तीसरी से सातवी कक्षा में ये सभी छात्राएँ पढ़ती है। यह छात्रावास महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सफल प्रयोग है। कमला नगर जिले के सावन पार्क केन्द्र में केशव छात्र निकेतन का शुभारंभ हुआ। इस छात्रावास में 23 छात्र रह रहे हैं। बारहवी को परीक्षा के पश्चात खूब ये छात्र दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं बहुत से छात्र सरकारी नौकरी की कोशिश करने के लिए कोचिंग ले रहे हैं। यहाँ एक बड़ा वाचनालय भी बनाया गया है जहाँ एक साथ 100 से अधिक छात्र बैठ कर पढ़ सकते हैं। वर्तमान में 7 छात्रावास गोपालधाम (रघुवीर नगर), अपराजिता, स्वामी विवेकानन्द छात्रावास (लाल कुआं), प्रकाशानन्द छात्रावास (वजीराबाद) एवं सेवाधाम छात्रावास संचालित हैं।

वैभव श्री

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार तो प्राप्त होता ही है इसके अलावा वे अपने घर की आर्थिक व्यवस्था भी संभाल लेती हैं। समाज का कोई भी वर्ग निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर बन सकें, सेवा भारती इस ओर निरंतर कार्यरत है।

सोपान

सोपान सेवा भारती का एक उत्कृष्ट प्रयोग है। ट्रेनर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम है। यहां पर सौंदर्य प्रशिक्षण फैशन डिजाइनिंग और लड़कों के लिए हेयर कटिंग ट्रेनिंग मुख्य रूप से चलते है। सुबह से शाम तक दो दो शिफ्ट चलती हैं। बच्चे स्वयं वहां की व्यवस्थाएं साफ सफाई रख रखाव संभालते हैं रोज़ प्रार्थना मंत्रो से दिन की शुरूवात करते हैं।

हिंदू शरणार्थी हेतु सेवा कार्य

अपने धर्म के कारण दर-दर की ठोकरे, उपेक्षा, साधन हीनता, पाकिस्तान, बंग्लादेश व अफगानिस्तान से निकाले जाने, कोई नागरिकता न होने का दर्द हिन्दू शरणाथी बस्तियों में साफ देखा जा सकता है। अपने संस्कार, धर्म, रीति-रिवाज, बोली, त्यौहार और अपनत्व की भावना ढूंढते ये लोग अमानवीय जीवन जीने को विवश हैं। सेवा भारती ने इनके बीच अनेक सेवा कार्य प्रारंभ किये, जिससे ये लोग भी मुख्य धारा का हिस्सा बन सकें। कुल बस्तियां: 7, मजनू का टीला, सिग्नेचर ब्रिज, आदर्श नगर, रोहिणी, भाटी मांइस, बिजवासन सेवा कार्य: सेवाधाम में 3 बच्चों का प्रवेश, ट्यूशन, मेडिकल कैंप, वीएचपी के साथ निरंतर सपंर्क, टीकाकरण, कौशल विकास, पानी की टंकियां।

टीन्स 4 सेवा

4 साल पहले जी डी गोएनका स्कूल के बच्चे सेवा भारती के बस्ती केन्द्रों पर जा के गर्मियों की छुट्टी में बच्चों को ड्राइंग, नृत्य कला व अन्य चीजें सिखाते थे। कोरोना आने पर उन्हीं बच्चों के आग्रह पर "मंबी वदम जमंबी वदम" प्रोजेक्ट बना। इसी श्रृंखला को आगे रखने हेतु करीब दो साल पूर्व ''टींस 4 सेवा'' का गठन हुआ। टीन्स 4 सेवा का मुख्य कार्य सेवा कार्यों के माध्यम से बच्चों में संस्कार व उनका व्यक्तित्व निर्माण करना है। हर महीने 1 कार्यक्रम की सूचनावली बनती है जिसमें बच्चों की सहभागिता रहती है।हर माह कोई न कोई कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जैसे भजन प्रतियोगिता, कला, वाद-प्रतिवाद, हास्य कला, आदि। इन सभी कार्यक्रमों में दोनों प्रकार के बच्चे भाग लेकर पुस्कार जीतते हैं। दिवाली व होली मिलन कार्यक्रम में बच्चों ने अपना प्रतिभा प्रदर्शन किया। इन सभी ने आपस में उपहार का लेन-देन किया। आज-कल (जून माह) में मेंटर शिप कार्यक्रम चल रहा है, जिस में पुरस्कार के तौर पर 34 बच्चों को 1-1 मेंटर से जोड़ा जा रहा है, जो अपनी विद्या के अग्रणी हैं। इस में सर्वश्री रमेश जी, नवनीत जी, शिवानी जी, नम्रता जी, इंदू जी, गमेशाचार्य जी, अमित देव योगाचार्य जी जैसे कुछ नाम शामिल हैं। ❐

ए-वन आधारित बालबाड़ी

ए-वन आधारित (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) आधारित बालवाड़ी हँस फाउण्डेशन के सहयोग से अभी कुछ बालवाड़ी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित की है आगामी वर्षों में सारी बालवाडी शक्ति के केन्द्रों में परिवर्तित करने का प्रयास रहेगा। इन बालवाड़ीयों पर बच्चों के विकास हेतू और बस्ती के जागरण हेतू सारी सुविधाएँ देने का प्रयास करेंगें। बच्चों का हेल्थ कार्ड बन सकें पोषण सम्बन्धी अन्य जानकारी दी जा सके और उनके अभिभावकों से भी सम्पर्क किया जा सके ऐसी सोच रख के इन बालवाड़ीयों का विकास किया जाएगा। ❐

मेटर-मेंटी प्रयास

मेटर - मेंटी प्रयास (विश्वसनीय मार्गदर्शक- सलाहकार - शिष्य परम्परा) सेवा धाम के युवा - नौजवान - मेधावी छात्र कक्षा बारहवी केपश्चात् वजीराबाद छात्रावस में नए अवसरोंकी तलाश में आगे की पढ़ाई करने हेतु एक सहारा ढूंढते हैं। इन नवयुवकों को सही मार्गदर्शन - सलाह - आत्मीयता - मित्रवत व्यवहार की आवश्यकता रहती है। कॉलेज के प्रोफेसर और अन्य सम्भ्रांत परिवारों के सफल लोगों को इन नवयुवकों के मेंटर (मार्गदर्शक) के रूप में जोड़ने का प्रयास रहेगा। ❐

उन्नयन

यह प्रकल्प किन्नर समाज के लोगों के लिए सशक्तिकरण की एक नई पहल है। किन्नर समुदाय अक्सर समाज में असमानता का शिकार होता आया है, इस योजना के माध्यम से उनके जीवन की गुणवत्ता सुधारने और विभिन्न प्रकार के कौशल का प्रशिक्षण देकर आजीविका को स्थाई बनाने के लिए एक माध्यम उपलब्ध कराया जाता है। ❐

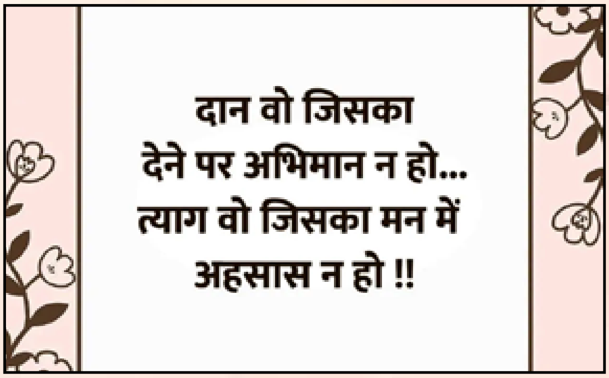

वाणी

वाणी: गत माह में वाणी की नींव सेवा भारती ने रखी। ऐसी बालिकाएँ जो बोल - सुन नहीं सकती उनका इलाज हो और आवश्यकता अनुसार ऑपरेशन किया जा सके। हमारा प्रयास रहेगा कि नए दानदाता हमसे जुड़े और बच्चियों के ऑपरेशन का खर्च वहन करें। उदाहरण:- ऑटो क्षेत्र की कम्पनियाँ। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

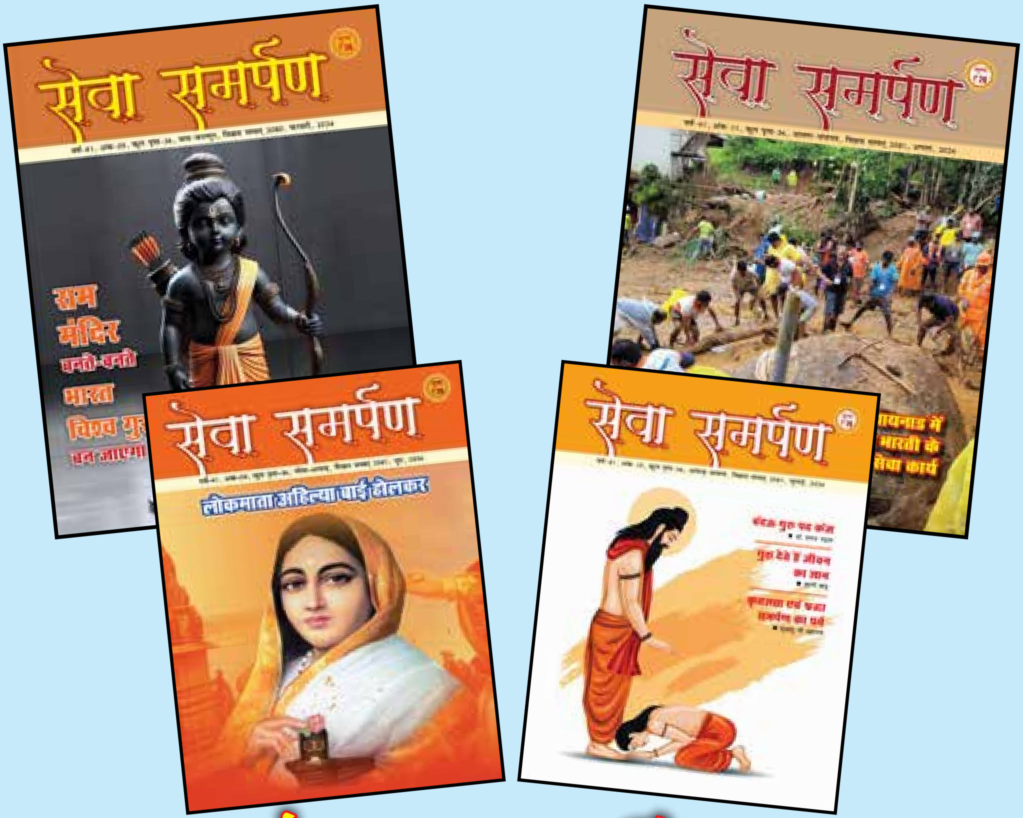

सेवा समर्पण

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50, 000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 दिसम्बर, 2024, प्रकाशन तिथि-5 दिसम्बर, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."
(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak
(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)
(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan
(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment
(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ.. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।